व्यापार में धर्म होना चाहिए धर्म में व्यापार नहीं इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया

जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे

परम पूज्य दादाश्री गाँव गाँव देश विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे

आपश्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ

नीरूबहन अमीन नीरू माँ को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी

दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरूमाँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति निमित्त भाव से करवा रही थीं

पूज्य दीपकभाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी

नीरूमाँ की उपस्थिति में ही उनके आशीर्वाद से पूज्य दीपकभाई देश विदेशो में कई जगहों पर जाकर मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान करवा रहे थे जो नीरूमाँ के देहविलय पश्चात् आज भी जारी है

इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हज़ारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हैं

पुस्तक में मुद्रित वाणी मोक्षार्थी को मार्गदर्शन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी लेकिन मोक्षप्राप्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है

अक्रम मार्ग के द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग आज भी खुला है

जैसे प्रज्वलित दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्वलित कर सकता है उसी प्रकार प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान प्राप्त कर के ही स्वयं का आत्मा जागृत हो सकता है

आत्मविज्ञानी श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल जिन्हें लोग दादा भगवान के नाम से भी जानते हैं उनके श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहार ज्ञान संबंधी जो वाणी निकली उसको रिकॉर्ड करके संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता हैं

ज्ञानी पुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान संबंधी विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्भुत संकलन इस वाणी में हुआ है जो नये पाठकों के लिए वरदानरूप साबित होगी

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है ऐसा अनुभव हो जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्यकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है परन्तु यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय ज्यों का त्यों तो आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा

जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो ज्ञान का सही मर्म समझना हो वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें ऐसा हमारा अनुरोध है

प्रस्तुत पुस्तक में कईं जगहों पर कोष्ठक में दर्शाये गये शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गये वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गये हैं

जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गये हैं

दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों रखे गये हैं क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके

हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिये गये हैं

अनुवाद संबंधी कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं

लौकिक जगत् में बाप बेटा माँ बेटा या बेटी पति पत्नी वगैरह संबंध होते हैं

उनमें गुरु शिष्य भी एक नाज़ुक संबंध है

गुरु को समर्पित होने के बाद पूरी ज़िन्दगी उनके प्रति ही वफादार रहकर परम विनय तक पहुँचकर गुरु आज्ञा के अनुसार साधना करके सिद्धि प्राप्त करनी होती है

वहाँ लेकिन सच्चे गुरु के लक्षण वैसे ही सच्चे शिष्य के लक्षण कैसे होते हैं उसका सुंदर विवेचन यहाँ पर प्रस्तुत हो रहा है

जगत् में विविध मान्यताएँ गुरु के लिए प्रवर्तमान हैं और तब ऐसे काल में यथार्थ गुरु बनाने के लिए लोग उलझन में पड़ जाते हैं

यहाँ पर वैसी उलझनें प्रश्नकर्ता द्वारा ज्ञानीपुरुष से पूछी गई हैं और समाधानी स्पष्टीकरण रूपी उत्तरों की प्राप्ति हुई है

सामान्य समझ में गुरु सद्गुरु और ज्ञानीपुरुष तीनों को एक दूसरे के साथ मिला दिया जाता है

जब कि यहाँ पर इन तीनों के बीच का एक्ज़ेक्ट स्पष्टीकरण मिलता है

इतने से ही मोक्ष मार्ग के नेता गुरु कैसे होने चाहिए वह समझ में आता है

गुरु और शिष्य दोनों कल्याण के मार्ग पर प्रयाण कर सकें उसके लिए तमाम दृष्टिकोणों से गुरु शिष्य के अन्योन्य संबंधों की समझ लघुत्तम फिर भी अभेद ऐसे गज़ब के पद में बरतनेवाले ज्ञानीपुरुष की वाणी द्वारा प्रकाशमान हुई वह यहाँ पर संकलित हुई है जो मोक्षमार्ग पर चलनेवाले पथिक के लिए मार्गदर्शक गुरु बन पड़ेगी

प्रश्नकर्ता मैं बहुत जगह पर घूमा हूँ और सब जगह मैंने प्रश्न पूछे कि गुरु अर्थात् क्या

लेकिन मुझे कोई संतोषजनक जवाब नहीं मिला

प्रश्नकर्ता जानकार की

दादाश्री वह जानकार अर्थात् गुरु

जब तक रास्ता नहीं मालूम हो तब तक रास्ते में किसीको पूछने की ज़रूरत पड़ती है

किसी छोटे बच्चे से भी पूछना पड़ सकता है

जिसे जिसे पूछना पड़े वे गुरु कहलाते हैं

गुरु हों तभी रास्ता मिलता है

ये आँखें नहीं हों तो क्या होगा

गुरु वह दूसरी आँख है

गुरु मतलब जो हमें आगे की सूझ दें

प्रश्नकर्ता हाँ ठीक है

प्रश्नकर्ता अपनी ग़रज़ से

दादाश्री नहीं तो पूछे बिना चलो न पूछो नहीं और वैसे ही चलो न कोई अनुभव करके देखना न

वह अनुभव आपको सिखाएगा कि गुरु बनाने की ज़रूरत है

मुझे सिखाना नहीं पड़ेगा

इसलिए रास्ता है लेकिन उसे दिखानेवाले नहीं हैं न

दिखानेवाले हों तो काम चलेगा न

गुरु मतलब कोई दिखानेवाला जानकार चाहिए या नहीं

जो गुरु हैं उनके हम फॉलोअर्स कहलाते हैं

वे आगे चलते हैं और हमें आगे का रास्ता दिखाते जाते हैं वे जानकार कहलाते हैं

एक व्यक्ति सूरत के स्टेशन पर जाने के लिए इस तरफ मुड़ गया

यहाँ से इस रास्ते पर निकला और वह रोड आई औरतुरंत इस दिशा के बदले उस दिशा में चला जाए फिर वह सूरत ढूँढने जाए तो मिलेगा क्या

घूमता रहे तो भी नहीं मिलेगा

रात पड़े दिन हो जाए तो भी नहीं मिले

ऐसी यह उलझन है

प्रश्नकर्ता कोई भी गुरु सच्चा रास्ता नहीं बताते हैं

दादाश्री परंतु वे गुरु ही रास्ता नहीं जानते वहाँ पर क्या हो फिर

जानकार ही कोई नहीं मिला

जानकार मिला होता तो यह उपाधि ही नहीं होती

जानकार मिला होता तो यहाँ हमें स्टेशन भी दिखाता कि यह स्टेशन है अब तू गाड़ी में बैठ

सब दिखाकर पूरा कर देता

यह तो वह भी भटका हुआ और हम भी भटके हुए इसलिए भटकते ही रहते हैं

इसलिए सच्चाजानकार ढूँढ निकालो तो वह स्टेशन दिखाएगा नहीं तो अंदाज से कुछ भी बताकर भटकाते ही रहेंगे

एक अंधा दूसरे अंधे को ले जाए तो वह कहाँ ले जाएगा

सच्चा जानकार तो तुरंत बता देगा

वह उधारवाला नहीं होता वह तो नकद ही होता है सब

अर्थात् जानकार नहीं मिला इसलिए जानकार ढूँढो

दादाश्री जानकार ऊपरी होता है परंतु कब तक

हमें मूल स्थान पर ले जाए तब तक

इसलिए सिर पर ऊपरी चाहिए ही दिखानेवाला चाहिए मार्गदर्शक चाहिए गाइड चाहिए ही हमेशा

जहाँ देखो वहाँ गाइड चाहिए

गाइड के बिना कोई काम होगा नहीं

हम यहाँ से दिल्ली गए हों और गाइड को ढूँढें तो वह क्या कहलाएगा

गुरु

वह गुरु ही कहलाएगा

पैसे दिए इसलिए गाइड बन जाता है

गुरु मतलब जो हमें मार्ग दिखाएँ गाइड की तरह

दादाश्री हाँ मार्गदर्शन दें वे गुरु कहलाते हैं

वह रास्ता दिखानेवाला कोई भी हो वह गुरु कहलाएगा

दादाश्री नहीं ज़रूरत है ठेठ तक

दादाश्री रास्ते में ठेठ तक गुरु की ज़रूरत पड़ेगी

गुरु को उनके गुरु की ज़रूरत पड़ती है

हमें इन स्कूलों में मास्टरों की कब तक ज़रूरत पड़ती है

हमें पढऩा हो तब न

पढऩा नहीं हो तो

यानी हमें दूसरा कोई लाभ नहीं चाहिए हो तो गुरु बनाने की ज़रूरत ही नहीं है

यदि लाभ चाहिए तो गुरु बनाएँ

यानी कि कोई अनिवार्य नहीं है

यह सब आपकी इच्छानुसार है

आपको पढऩा हो तो मास्टर रखो

आपको आध्यात्मिक जानना हो तो गुरु बनाने चाहिए और नहीं जानना हो तो कुछ नहीं

कोई नियम नहीं है कि ऐसा ही करो

यहाँ यदि स्टेशन तक जाना हो तो वहाँ पर भी गुरु चाहिए तो धर्म के लिए गुरु नहीं चाहिए

अर्थात् गुरु तो हमें हर एक श्रेणी में चाहिए ही

इसलिए कोई भी ज्ञान गुरु के बिना प्राप्त हो सके ऐसा है ही नहीं

सांसारिक ज्ञान भी गुरु के बिना नहीं होता और आध्यात्मिक ज्ञान भी गुरु के बिना हो ऐसा नहीं है

गुरु के बिना ज्ञान की आशा रखें वे सारी गलत बातें हैं

प्रश्नकर्ता एक व्यक्ति कहते हैं कि ज्ञान लेना नहीं होता है ज्ञान देना भी नहीं होता है ज्ञान हो जाता है

तो वह समझाइए

दादाश्री यह मूर्छित लोगों की खोज है

मूर्छित लोग होते हैं न उनकी यह खोज है कि ज्ञान लेना नहीं होता देना नहीं होता ज्ञान अपने आप हो जाता है

परंतु वह मूर्छा कभी भी जाती नहीं

क्योंकि बचपन से जो पढ़ा वह भी ज्ञान लेते लेते आया है अध्यापक ने तुझे दिया और तूने लिया

फिर वापिस तूने दूसरे को दिया

लेने देने का स्वभाववाला जगत् है

अध्यापक ने आपको ज्ञान नहीं दिया था

आपने दूसरों को दिया

ऐसे लेन देन का स्वभाव है

दादाश्री अपने आप तो किसीको ही ज्ञान होता है परंतु वह अपवाद के रूप में होता है और इस भव में गुरु नहीं मिले हों परंतु पूर्वभव में तो गुरु मिले ही होते हैं

बाक़ी सब निमित्त के अधीन है

हमारे जैसे कोई निमित्त मिल आएँ तो आपका काम हो जाए

तब तक आपको डेवलप होते रहना है

फिर ज्ञानीपुरुष का निमित्त मिले तो उस निमित्त के अधीन सब प्रकट हो जाता है

दादाश्री हाँ सभी तीर्थंकर स्वयंबुद्ध होते हैं परंतु पिछले अवतारों में गुरु के द्वारा उन्हें तीर्थंकर गौत्र बंध चुका होता है

इसलिए स्वयंबुद्ध तो वे अपेक्षा से कहलाते हैं कि इस अवतार में उन्हें गुरु नहीं मिले इसलिए स्वयंबुद्ध कहलाते हैं

वह सापेक्ष वस्तु है

आज जो स्वयंबुद्ध हुए हैं वे सभी पिछले अवतारों में पूछ पूछकर आए हैं यानी सब पूछ पूछकर ही जगत् चलता रहता है

अपने आप किसीको ही स्वयंबुद्ध को होता है वह अपवाद है

वर्ना गुरु के बिना तो ज्ञान ही नहीं है

दादाश्री परंतु उन्होंने मदद ली थी बहुत पहले ली थी

उन्होंने दो तीन अवतारों पहले गुरु से मदद ली थी

मदद लिए बिना कोई मुक्त नहीं हुआ है

इसमें भी निमित्त तो होता ही है

यह तो ऋषभदेव के भव में ऐसा दिखा लोगों को कि अपने आप खुद ही बंधन तोड़े

परंतु खुद ही खुद से नहीं हो सकता कभी भी किसीसे हुआ नहीं और होगा नहीं

इसलिए निमित्त हमेशा चाहिए ही

दादाश्री महावीर स्वामी के बहुत सारे गुरु हो चुके थे

परंतु वे पिछले एक दो अवतारों में नहीं हुए थे

यों वह क्या ऐसे ही लड्डू खाने के खेल हैं

तीर्थंकर के अंतिम अवतार में उन्हें गुरु की ज़रूरत नहीं रहती

दादाश्री वे तो सारा पिछले भव में सीखे हुए थे

अभी यह मूर्ति तो निमित्त बनती है

गुरु तो हर एक अवतार में चाहिए ही

दादाश्री लेकिन इस भव में वे गुरु न भी मिलें और ज़रूरी भी नहीं होता और फिर दूसरे जन्म में भी वे फिर से मिल सकते हैं

लेकिन ऐसा है न अभी तो आगे कितना रास्ता चलना बाक़ी रहा अभी तो कितने ही गुरुओं की ज़रूरत पड़ेगी

जब तक मोक्ष नहीं हो जाता तब तक गुरु की ज़रूरत पड़ेगी

यथार्थ समकित होने के बाद गुरु की ज़रूरत नहीं रहेगी

इसमें पोल नहीं है गुरु बिना तो चलेगा ही नहीं

प्रश्नकर्ता कितने ही संत ऐसा कहते हैं कि गुरु बनाने की ज़रूरत नहीं है

प्रश्नकर्ता बहुत लोग गुरु नहीं बनाते

दादाश्री गुरु नहीं बनाते ऐसा होता ही नहीं

ये लोग ऐसा उपदेश देने लगे कि गुरु मत बनाना

तब से ही हिन्दुस्तान में ऐसा हो गया है

नहीं तो हिन्दुस्तान देश ने तो पहले से ही गुरु को मान्य किया है कि चाहे कोई भी लेकिन एक गुरु रखना

प्रश्नकर्ता वह तो मन क़बूल करता हो वही रास्ता पकड़ेंगे

दादाश्री नहीं मन तो भटकने का खोज निकालकर कबूल करता है वह कुछ रास्ता नहीं कहलाता

इसलिए पूछना पड़ेगा गुरु बनाने पड़ेंगे

गुरु बनाकर पूछना पड़ेगा कि कौन से रास्ते मुझे जाना चाहिए

मतलब गुरु के बिना तो इस दुनिया में इतना भी यहाँ से वहाँ तक भी नहीं चल सकते

प्रश्नकर्ता हाँ

प्रश्नकर्ता चाहिए

प्रश्नकर्ता आज का मनोविज्ञान कहता है कि व्यक्ति को बाहरी आधार छोड़कर खुद के आधार पर आना चाहिए

बाहरी आधार वह फिर चाहे जो हो लेकिन जिज्ञासु उसका आधार लेकर पंगु बन जाता है

दादाश्री बाहरी आधार लेकर पंगु बने ऐसा नहीं होना चाहिए

बाहर का आधार छोड़कर खुद के आधार पर ही रहना है

लेकिन खुद का आधार नहीं हो जाए

तब तक बाहर का नैमित्तिक आधार लेना है

नैमित्तिक

कोई पुस्तक निमित्त रूप बन जाती है या नहीं बन जाती

सबकुछ निमित्तरूप नहीं हो जाता

इसलिए यह आज का मनोविज्ञान जो कहता है आधार छोड़ने को वैसे कुछ हद तक उसका आधार छोड़ दें परंतु कुछ हद तक आधार लेना पड़ता है पुस्तकों का लेना पड़ता है दूसरा आधार लेना पड़ता है तीसरा आधार लेना पड़ता है

प्रश्नकर्ता ठीक है

प्रश्नकर्ता इसलिए ठेठ तक जाना हो तो भी गुरु चाहिए

दादाश्री जहाँ जाना हो वहाँ गुरु चाहिए

हम यहाँ से गाड़ी लेकर जा रहे हों और हाईवे के रास्ते से जाना हो तब किसीसे पूछें तब वह ले जाएगा नहीं तो उल्टे रास्ते चले जाएँगे

इसलिए संसार में भी गुरु की आवश्यकता है और निश्चय में भी गुरु की आवश्यकता है

अर्थात् गुरु क्या है

किसे कहते हैं

वह समझने की ज़रूरत है

दादाश्री आपके अनुभव भी आपके गुरु हैं

जितना अनुभव हुआ वह आपको उपदेश देगा

और यदि अनुभव उपदेश का कारण नहीं बनता हो तो वह अनुभव नहीं है

इसलिए ये सभी गुरु ही हैं

अरे एक आदमी लंगड़ा रहा था और दूसरा एक उसका मज़ाक करके हँसा

फिर थोड़ी देर के बाद वह मुझे मिला

उसने मुझे कहा कि आज मैं ऐसे मज़ाक करके हँसा

तब मैं जागृत हो गया कि अरे यह तू आत्मा देखता है या क्या देखता है

मुझे यह ज्ञान हुआ तो सच में सावधान हो गया

अर्थात् हर एक वस्तु उपदेश देती है

हमेशा हर एक अनुभव उपदेश देकर ही जाता है

एक बार अच्छी तरह बैठे हों और जेब कट गई हो तब फिर वह उपदेश हमारे पास रह ही जाता है

यह ठोकर भी गुरु कहलाती है

गुरु के बिना तो व्यक्ति आगे बढ़े ही किस तरह

हमें रास्ते चलते ठोकर लगे तो ठोकर को भी ऐसा होता है कि तू नीचे देखकर चले तो क्या बुरा है

इसलिए हर एक गुरु जहाँ तहाँ सब मुझे गुरु लगे हैं

वह तो जहाँ से लाभ हुआ हो उन्हें गुरु मान लें

ठोकर से यदि लाभ हुआ हो तो ठोकर को हम गुरु मान लें

इसलिए मैंने तो इस तरह लाभ प्राप्त किए हैं सारे

यानी गुरु किए बिना चले ऐसा नहीं है

गुरु के बगैर चले ऐसा है कहनेवाले विरोधाभास में हैं

इस दुनिया में कभी भी गुरु बनाए बिना कुछ चल सके ऐसा नहीं है

फिर वह टेकनिकल हो या चाहे कोई भी बाबत हो

गुरु की ज़रूरत नहीं है वह वाक्य लिखने जैसा नहीं है

इसलिए लोगों ने मुझे पूछा कितने ही लोग ऐसा क्यों कहते

मैंने कहा जान बूझकर नहीं कहते दोषपूर्वक नहीं कहते गुरु के प्रति खुद की जो चिढ़ है वह पूर्वजन्म की चिढ़ आज ज़ाहिर कर रहे हैं

दादाश्री ये जो जो लोग ऐसा कहते हैं कि गुरु की ज़रूरत नहीं है

वे किसके जैसी बात हैं

एक बार बचपन में मैं खीर खा रहा था और उल्टी हो गई

अब उल्टी दूसरे कारणों से हुई खीर के कारण नहीं

परंतु मुझे खीर पर चिढ़ चढ़ गई फिर खीर देखूँ और घबराहट हो जाती

इसलिए जब मेरे घर पर खीर बने तब मैं बा से कहता कि मुझे यह मिठाई खाना पसंद नहीं है तो आप क्या दोगे

तब बा कहती हैं भाई बाजरे की रोटी है

यदि तू घी गुड़ खाए तो दे दूँ

तब मैंने कहा कि नहीं मुझे घी गुड़ नहीं चाहिए

फिर शहद दें तभी मैं खाता था लेकिन खीर को तो छूता ही नहीं था

फिर बा ने मुझे समझाया कि भाई ससुराल में जाएगा तब कहेंगे कि क्या इसकी माँ ने खीर नहीं खिलाई कभी

तब तुझे खीर परोसेंगे और तू नहीं खाएगा तो खराब दिखेगा

इसलिए थोड़ा थोड़ा खाना शुरू कर

ऐसे वैसे मुझे पटाया

लेकिन कुछ भी हुआ नहीं

वह चिढ़ घुस गई तो घुस गई

वैसे ही यह चिढ़ घुस गई

दादाश्री इस दुनिया में कोई मनुष्य ऐसा नहीं निकला कि जो गुरु का विरोधी हो

गुरु नहीं चाहिए वे शब्द किसी मनुष्य को बोलने ही नहीं चाहिए

अर्थात् गुरु नहीं चाहिए वे सब विरोधाभासवाली बातें कहलाती हैं

कोई ऐसा कहे कि गुरु की ज़रूरत नहीं है तो वह एक दृष्टि है उसका दृष्टिराग है

यह तो गुरु की ज़रूरत नहीं है कहकर अपना व्यू पोईन्ट रखा है

कुछ नहीं

कोई अनुभव ऐसा हुआ होगा कि सभी जगह घूमने के बाद ऐसे करते करते करते करते खुद का अंदर से ही समाधान मिलने लगा उस श्रेणी में आए

इसलिए फिर मन में ऐसा लगा कि गुरु बनाने वह बोझ बेकार है

प्रश्नकर्ता गुरु की ज़रूरत नहीं है कहते हैं वह तो किसी खास स्टेज में पहुँचने के बाद गुरु काम में नहीं आते

उसके बाद तो आप पर आधारित है

यानी गुरु की तो ठेठ तक ज़रूरत पड़ेगी

बेहद आते आते तक तो तेल निकल जाता है

दादाश्री संसार में भी गुरु चाहिए और मोक्षमार्ग में भी गुरु चाहिए

वह तो कोई ही व्यक्ति बोलता है कि गुरु की ज़रूरत नहीं है

गुरु के बिना तो चलेगा ही नहीं

गुरु अर्थात् उजाला कहलाता है

ठेठ तक गुरु चाहिए

श्रीमद् राजचंद्र ने कहा है कि बारहवें गुणस्थानक तक गुरु की ज़रूरत पड़ेगी बारहवें गुणस्थानक यानी भगवान होने तक गुरु की ज़रूरत पड़ेगी

प्रश्नकर्ता गुरुओं का विरोध करने के लिए मेरा प्रश्न नहीं है

मैं तो वह समझना चाहता हूँ

दादाश्री हाँ लेकिन गुरु की खास ज़रूरत है इस दुनिया में

मेरे भी अभी तक गुरु हैं न

मैं पूरे जगत् का शिष्य बनकर बैठा हूँ

तो मेरा गुरु कौन

लोग

अर्थात् गुरु की तो ठेठ तक ज़रूरत है

प्रश्नकर्ता हाँ उपादान हो तो ओटोमेटिक निमित्त मिल जाते हैं वह बात प्रचलित है

दादाश्री वे सारी बातें लिखी हुई हैं न वे सारी बातें करेक्ट नहीं हैं

करेक्ट में एक ही वस्तु है कि निमित्त की ज़रूरत है और उपादान की भी ज़रूरत है

परंतु उपादान कम हो और उसे निमित्त मिल जाए तो उपादान बढ़ जाता है उसका

प्रश्नकर्ता वह तो नहीं चलेगा

लेकिन यह तो व्यवहार की बात हुई सारी

दादाश्री नहीं व्यवहार में भी वही बात और इसमें निश्चय में भी वही बात न

इसमें भी निमित्त की पहले ज़रूरत है

यहाँ स्कूल हटा दिए जाएँ किताबें हटा दी जाएँ तो कोई भी मनुष्य कुछ पढ़ेगा नहीं लिखेगा नहीं

निमित्त होगा तो अपना काम आगे चलेगा नहीं तो काम आगे चलेगा नहीं

तो निमित्त में क्या क्या है

पुस्तकें निमित्त हैं मंदिर निमित्त हैं जिनालय निमित्त हैं ज्ञानीपुरुष निमित्त हैं

अब ये सभी पुस्तकें मंदिर नहीं हों तो इस उपादान का क्या होगा

अर्थात् निमित्त हों तभी काम होगा नहीं तो काम होगा नहीं

चौबीस तीर्थंकरों ने बार बार यही कहा है कि निमित्त को भजो

उपादान कम होगा तो निमित्त मिलेगा तो उपादान उसका जागृत हो जाएगा

फिर भी उपादान का तो इसलिए कहना चाहते हैं कि यदि तुझे निमित्त मिलने के बाद भी उपादान तू अजागृत रखेगा यदि उपादान तू जागृत नहीं रखेगा और तू झोंका खा जाएगा तो तेरा काम नहीं होगा और तुझे मिला हुआ निमित्त व्यर्थ जाएगा

इसलिए सावधान रहना

ऐसा कहना चाहते हैं

उपादान अर्थात् क्या

कि घी रख बाती रख सब तैयार रख पूरा

ऐसा तैयार तो अनंत जन्मों से इन लोगों ने रखा हुआ है

परंतु सिर्फ दीया प्रज्वलित करनेवाला नहीं मिला

घी बातियाँ सब तैयार हैं परंतु प्रज्वलित करनेवाला चाहिए

इसलिए मोक्ष में ले जानेवाले निमित्त के शास्त्र नहीं मिले हैं मोक्ष में ले जानेवाले निमित्त ऐसे ज्ञानीपुरुष नहीं मिले हैं वे सभी साधन मिलते नहीं हैं

वह निमित्त जिसे कहा जाता है उसके बिना तो भटकते रहते हैं

लोग निमित्त को इस प्रकार समझे हैं कि उपादान होगा तो निमित्त तुझे उस घड़ी मिल आएगा

लेकिन मिल जाने का अर्थ ऐसा नहीं होता

भावना होनी ही चाहिए

भावना के बिना तो निमित्त भी नहीं मिलता

यह तो बात का दुरुपयोग हुआ है सारा

निमित्त ऐसा बोलता है कि निमित्त की ज़रूरत नहीं है

खुद निमित्त होने के बावजूद ऐसा बोलता है

प्रश्नकर्ता हाँ ऐसा श्रीमद् राजचंद्र भी कहते हैं

दादाश्री सिर्फ श्रीमद् राजचंद्रजी नहीं तीर्थंकरों ने भी वही कहा है कि निमित्त के बिना कोई काम होगा नहीं

अर्थात् उपादान होगा तो निमित्त आ मिलेंगे

निमित्त की ज़रूरत नहीं है यह तीर्थंकरों की बात नहीं है या श्रीमद् राजचंद्र की बात नहीं है

ऐसी बात जो बोले उसकी जोखिमदारी है

उसमें दूसरे किसीकी जोखिमदारी नहीं है

कृपालुदेव ने एक ही बात कही है कि दूसरे किसीकी खोज मत कर

केवल एक सत्पुरुष को खोजकर उनके चरणकमल में सर्व भाव अर्पण करके बरतता जा

फिर भी यदि मोक्ष नहीं मिले तो मेरे पास से लेना

नहीं तो ऐसा ही लिखते कि तू अपने आप घर पर सोता रह उपादान जागृत करते रहना तो तुझे निमित्त आ मिलेंगे

तब इसमें लोग कहाँ तक ले गए हैं कि सभी वस्तुएँ अलग हैं एक वस्तु दूसरी वस्तु के लिए कुछ भी नहीं कर सकती उसके साथ इसे जोइन्ट कर दिया है

इसलिए उन्हें ऐसा ही लगता है कि कोई दूसरा किसीके लिए कुछ नहीं कर सकता

प्रश्नकर्ता वे लोग ऐसा ही कहते हैं कि कोई किसीके लिए कुछ कर नहीं सकता

दादाश्री अब वह वाक्य इतना अधिक गुनहगारीवाला वाक्य है

दादाश्री वह तो अलग बात है

शास्त्र अलग कहना चाहते हैं और लोग समझे अलग

चुपड़ने की दवाई पी जाते हैं और मर जाते हैं उसमें कोई क्या करे

उसमें डॉक्टर का क्या दोष

कोई किसीके लिए कुछ नहीं कर सके ऐसा होता तब तो वकील काम ही नहीं आते न

ये डॉक्टर काम में ही नहीं आते न

पत्नी काम आएगी नहीं न

ये तो सभी एक दूसरे के काम आते हैं

दादाश्री वह तो निश्चय में कही हुई है वह बात व्यवहार में नहीं है

व्यवहार में लेना देना है ही सभी के साथ और निश्चय में कोई किसीका कुछ नहीं कर सकता

एक तत्व दूसरे तत्व को कुछ भी हेल्प नहीं करता लेकिन वह निश्चय की बात है

परंतु व्यवहार से सबकुछ होता है

यह तो उल्टे वाक्य समझाकर इस पब्लिक को बहुत नुकसान हुआ है

प्रश्नकर्ता इसलिए वह वस्तु ही समझना चाहता हूँ

प्रश्नकर्ता हाँ दादा

ऐसा है न यह कोई बोलता नहीं और सभी ने मान लिया मन मना लिया

मेरे जैसे ज्ञानीपुरुष स्पष्ट बोल सकते हैं और जैसा है वैसा हमसे बोला जा सकता है

पूछो सब सब पूछा जा सकता है

हर एक प्रश्न पूछा जा सकता है

फिर यह संयोग मिलेगा नहीं

इसलिए सबकुछ पूछ लो

प्रश्न अच्छे हैं और यह सब ज्ञान प्रकट होगा तो लोग जानेंगे न

हम ठेठ तक की बात करेंगे

आप पूछो तो हम जवाब देंगे

प्रश्नकर्ता ऐसा भी कहा जाता है कि ज्ञान गुरु से भी नहीं होता और गुरु के बिना भी नहीं होता

वह समझाइए

दादाश्री बात तो सच्ची है न

यदि कभी गुरु ऐसा कहें कि मेरे कारण हुआ तो गलत बात है और शिष्य कहे कि गुरु के बिना हुआ तो वह बात भी गलत है

हमने क्या कहा है

कि यह आपका ही आपको देते हैं

हमारा कुछ भी देते ही नहीं

नुकसान होगा क्योंकि उपकारी भाव चला जाएगा

जितना उपकारी भाव उतना अधिक परिणाम प्राप्त होगा

उपकारी भाव को भक्ति कहा है

प्रश्नकर्ता आपको निमित्त मानें तो उपकारी भाव चला जाएगा वह समझ में नहीं आया

दादाश्री हम तो आपसे कहते हैं कि हम निमित्त हैं परंतु यदि आपने निमित्त माना तो आपको लाभ नहीं मिलेगा

आप उपकार मानोगे तो परिणमित होगा

ऐसे नियम हैं इस दुनिया के

लेकिन ये निमित्त ऐसे हैं कि मोक्ष ले जानेवाले निमित्त हैं

इसलिए महानतम् उपकार मानना

वहाँ अर्पण करने को कहा है

सिर्फ उपकार ही नहीं मानना है लेकिन सारा मन वचन काया अर्पण कर देना

सर्वस्व अर्पण करने में देर ही नहीं लगे ऐसा भाव आ जाना चाहिए

प्रश्नकर्ता नहीं

दादाश्री इसलिए जिस जिस चीज़ के निमित्त हैं वहाँ जाएँ तब अपना काम होगा

इसलिए क्रोध मान माया लोभ दूर करने हों यह सारा अज्ञान दूर करना हो तो ज्ञानी के पास जाना पड़ेगा

इसलिए कहा है कि सत् साधन चाहिए

सत् साधन मतलब क्या

सत्देव सत्धर्म और सद्गुरु

वास्तव में तो शास्त्र भी सत् साधन नहीं हैं मूर्ति भी सत् साधन नहीं है

सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही सत् साधन हैं

उनमें सब आ गया

सत्देव सद्गुरु और सत्धर्म वे तीनों एक साथ हों उनका नाम ज्ञानीपुरुष

जब विधि करते हैं तब वे सत्देव हैं बोलें तब सद्गुरु हैं और सुनें तब सत्धर्म है तीनों वही का वही है

एक का ही आराधन करना दूसरा झंझट ही नहीं

नहीं तो तीन का आराधन करना पड़े

यह तो एक में ही सब आ गया

प्रश्नकर्ता जैनिज़म में गुरुभाव जैसा तो कुछ है ही नहीं

सत्धर्म मतलब भगवान के कहे हुए शास्त्र आगम वे सत्धर्म है

सत्धर्म तो है भगवान के कहे हुए शास्त्र हैं लेकिन गुरु के बिना समझाए कौन

और सद्गुरु तो अपने यहाँ सब सद्गुरु होते हैं वे भी अभी सद्गुरु रहे नहीं हैं

क्योंकि उन्हें आत्मज्ञान नहीं है इसलिए

वर्ना सद्गुरु तो चाहिए ही

आपके वहाँ वे लेने आते हैं तब आपको भोजन देना है

औ्र उसके बदले में आपको वहाँ पढऩे जाना है

ऐसी भगवान ने व्यवस्था की है

हर एक व्यक्ति को अस्सी वर्ष के मनुष्य को भी सद्गुरु चाहिए

सत्देव अर्थात् क्या

कि वीतराग भगवान

अब वे हाज़िर नहीं हों तो उनकी मूर्ति रखते हैं

लेकिन सद्गुरु तो प्रत्यक्ष चाहिए

उनकी मूर्ति नहीं चलेगी

दादाश्री कोई प्रत्यक्ष गुरु तो मिले नहीं हैं

वास्तव में गुरु किसे कहा जाता है

प्रत्यक्ष मिलें तो

नहीं तो चित्रपट तो ये सभी हैं ही न

कृष्ण भगवान प्रत्यक्ष मिलें तो काम के

नहीं तो चित्रपट तो लोगों ने बेचे और हमने मढ़वाए

हमें इस भव में डिसाइडेड गुरु नहीं मिले कि ये ही गुरु हैं

वर्ना यदि प्रत्यक्ष हों न उन प्रत्यक्ष का धारण करे और छह महीने बारह महीनों तक उन दोनों में गुरु शिष्य का संबंध रहे उन्हें गुरु कहा जाता है

हमारा ऐसा कोई संबंध नहीं रहा

प्रत्यक्ष कोई नहीं मिले

अब मेरे इस भव में गुरु नहीं हैं उसका अर्थ ऐसा नहीं कि गुरु कभी भी नहीं थे

दादाश्री गुरु के बिना तो मनुष्य आगे आता ही नहीं

हर एक गुरु गुरु के बिना तो आगे आए ही नहीं होते

मेरा कहना है कि बगैर गुरु के तो कोई था ही नहीं

दादाश्री उन्हें इस भव में गुरु नहीं मिले थे

उन्होंने ऐसा लिखा है कि यदि हमें सद्गुरु मिले होते तो उनके पीछे पीछे चले जाते

लेकिन उनका ज्ञान सच्चा है

उन्हें अंतिम दशा में जो ज्ञान उत्पन्न हुआ वह आत्मज्ञान उत्पन्न हुआ था

दादाश्री वह सारा पिछला हिसाब कुछ लेकर आए हैं

पहले गुरु मिले थे ज्ञानी मिले थे उसमें से सामान लेकर आए हैं और किसी गलती के कारण रुक गया होगा

इसलिए इस अवतार में गुरु नहीं मिले परंतु पिछले अवतार के गुरु तो होंगे न

पिछले अवतार में गुरु मिले होंगे और इस अवतार में ज्ञान प्रकट हो गया

परंतु मुझे इस भव में विश्वास नहीं था कि इतना बड़ा ज्ञान उत्पन्न होगा

फिर भी वह सूरत के स्टेशन पर अचानक प्रकट हो गया

तब मुझे विश्वास हो गया कि यह तो ग़ज़ब का विज्ञान है

इन लोगों का कोई पुण्य जगा होगा

निमित्त तो किसीको बनाना पड़ता है न

अब लोग समझे कि इन्हें ज्ञान यों ही प्रकट हो गया लेकिन नहीं पिछले अवतार में गुरु बनाए थे उसका फल आया है यह

इसलिए गुरु के बिना तो कुछ भी हो ऐसा नहीं है

गुरु परंपरा चलती ही रहनेवाली है

दादाश्री वे दो आने हेल्प करते हैं

एकाग्रता का फल मिलता है और वह भी भौतिक फल मिलता है

उससे तो अभी चार आने कमवाले हों वे अच्छे

पहचान हो जानी चाहिए

जिन्होंने देखा नहीं हो उनका काम नहीं होता फिर उनके पीछे समाधि पर सिर फोड़ो फिर भी उससे कुछ होगा नहीं

यह तो महावीर के फोटो भी कुछ काम नहीं करते और कृष्ण भगवान के फोटो भी कुछ काम नहीं करते

प्रत्यक्ष हों तभी काम करेंगे

कितने ही अवतारों से कृष्ण भगवान को भजते हैं लोग महावीर को भजते हैं

लोगों ने कुछ कम किया है

भजना कर करके थक गए

रोज़ मंदिर गए तो भी देखो धर्मध्यान नहीं बँधता

फिर इसमें भी अवधि होती है

इन दवाईयों की भी अवधि डाली होती है न वह आप जानते हो न

एक्सपायरी डेट

वैसे ही इसमें भी होता है

लेकिन लोग तो जो चले गए हैं उनके ही नाम को बिना समझे गाते ही रहते हैं

दादाश्री जीवित गुरु नहीं हो तो कुछ भी होता नहीं है कुछ बात नहीं बनती

सिर्फ उनसे भौतिक लाभ होता है

क्योंकि उतना टाइम अच्छे काम में रहा उसके बदले में लाभ होता है

गुरु खुद यहाँ पर हाज़िर हों तभी वे आपके दोष निकाल देते हैं आपके दोष दिखाते हैं

खुद की सभी भूलें खुद को दिखने लगें उसके बाद उसे गुरु नहीं चाहिए

हमारी भूलें हमें दिखती हैं इसलिए पूरी दुनिया में सिर्फ हमें ही गुरु की ज़रूरत नहीं पड़ती वर्ना सभी को गुरु चाहिए

जो चले गए उनके पीछे आप गाते ही रहो न फिर भी कुछ होता नहीं

दादाश्री कुछ भी नहीं चलेगा

वह चित्रपट हस्ताक्षर नहीं कर सकता

आज यह इन्दिरा गांधी की फोटो लेकर हम बैठें तो हस्ताक्षर हो जाते हैं क्या

इसलिए आज जो जीवित हैं वे ही चाहिए

इसलिए आज इन्दिरा गांधी कुछ भी हेल्प नहीं कर सकती या जवाहर कुछ भी हेल्प नहीं कर सकते

अभी तो जो हाज़िर हैं वे हेल्प करेंगे

दूसरा कोई हेल्प नहीं कर सकता

हाज़िर होंगे उनके ही हस्ताक्षर चलेंगे

पूरे हस्ताक्षर नहीं हों और सिर्फ इनिश्यल्स आद्याक्षर होंगे तब भी चलेगा

और इन्दिरा गांधी के पूरे हस्ताक्षर होंगे तो भी नहीं चलेगा

प्रश्नकर्ता एक संत कहते हैं कि ये जो जड़ वस्तुएँ हैं मूर्ति फोटो उनका अवलंबन नहीं लेना चाहिए

आपकी नज़र के सामने जीवित दिखें उनका अवलंबन लो

इसलिए कहा है न कि सजीवन मूर्ति के बिना अकेला मत पड़ा रहना

कोई सजीवन मूर्ति ढूँढ निकालना और फिर वहाँ फिर उनके पास बैठना

तेरे से कुछ दो आने भी वे अच्छे हों तू बारह आना हो तो चौदह आनेवाली मूर्ति के पास बैठना

जो हो चुके हैं वे आज दोष दिखाने नहीं आएँगे

सजीवन हों वे ही दोष दिखाएँगे

इसलिए कृपालुदेव ने कहा है न सजीवन मूर्ति के लक्ष के बिना जो कुछ भी किया जाए वह जीव के लिए बंधन है

यह हमारा हृदय है

यह एक ही वाक्य इटसेल्फ सबकुछ समझा देता है

क्योंकि सजीवन मूर्ति के बिना जो भी कुछ करो वह स्वच्छंद है

प्रत्यक्ष यदि हाज़िर हों तो ही स्वच्छंद रुकेगा

नहीं तो स्वच्छंद किसीका रुकेगा नहीं

दादाश्री वह तो करते ही हैं न

और समकित हो जाए तब तो बुख़ार उतर गया ऐसा पता चलेगा न

समकित हो जाए तो बुख़ार उतर गया ऐसा पता नहीं चलेगा

बुख़ारवाली स्थिति और बुख़ार उतरी हुई स्थिति का पता चलेगा या नहीं पता चलेगा

दृष्टिफेर हुआ या नहीं वह पता नहीं चलेगा

समकित मतलब दृष्टिफेर

कभी एक्सेप्शन किसीके लिए अपवाद होता है

लेकिन हम यहाँ पर अपवाद की बात नहीं कर रहे हैं

हम तो सब सामान्य प्रकार की बात कर रहे हैं

इसलिए कृपालुदेव ने बहुत ज़ोर देकर कहा है कि भाई सजीवन मूर्ति के बिना कुछ मत करना

वह स्वच्छंद है निरा स्वच्छंद है

जो खुद के ही सयानेपन से आगे चल रहा है वह मोक्ष तो कभी भी नहीं पाएगा

क्योंकि सिर पर कोई ऊपरी नहीं है

सिर पर कोई गुरु या ज्ञानी नहीं हों तब तक क्या कहलाएगा

स्वच्छंद

जिसका स्वच्छंद रुके उसका मोक्ष होता है

ऐसे ही मोक्ष नहीं होता

सब से उत्तम तो गुरु से पूछना चाहिए

लेकिन वैसे गुरु तो इस समय में कहाँ से लाएँ

इसके बजाय तो किसी भी एक व्यक्ति को गुरु बनाना तो भी चलेगा

आपसे बड़े हों और आपका ध्यान रखते हों और आपको लगे कि मेरे दिल में ठंडक लगती है तो वहाँ बैठ जाना और स्थापना कर देना

शायद कभी एक दो भूलें उनकी हों तो निभा लेना

आप पूरे भूल से भरे हैं और उनकी तो एक दो भूलें हैं उसमें आप किसलिए न्यायधीश बनते हो

आपसे बड़े हैं तो आपको ऊँचे ले ही जाएँगे

खुद न्यायधीश बने वह भयंकर गुनाह है

प्रश्नकर्ता गुलांट खाएगी

दादाश्री जो गुरु प्रेम रखें जो गुरु अपने हित में हों वे ही सच्चे गुरु होते हैं

ऐसे सच्चे गुरु कहाँ से मिलेंगे

गुरु को देखते ही ऐसे अपना पूरा शरीर सोचे बिना ही उनके चरणों में झुक जाता है

देखते ही अपना मस्तक झुक जाए उसका नाम गुरु

अत यदि गुरु हों तो विराट स्वरूप होने चाहिए

तो अपनी मुक्ति होगी नहीं तो मुक्ति नहीं होगी

दादाश्री जहाँ पर अपने दिल को ठंडक हो उन्हें गुरु बनाना

दिल को ठंडक नहीं होती तब तक गुरु मत बनाना

इसलिए हमने क्या कहा है कि यदि गुरु बनाओ तो आँखों में समाएँ वैसे को बनाना

प्रश्नकर्ता हाँ सही है

वैसे गुरु हों तभी उनका आश्रय महसूस होगा उसे

प्रश्नकर्ता भारी

दादाश्री तो भारी मतलब अवश्य डूबेगा

वह डूबे तो डूबे लेकिन उस पर बैठे हों उन सभी की जलसमाधि हुई है

इस जगत् में यही हो रहा है

फिर मुझे गुरु कहाँ बनाते हो

यानी गुरु से हमें पूछना चाहिए कि हे गुरु महाराज आपके पास डूबें नहीं वैसी गुरुकिल्ली है

आप भारी हैं इसलिए डूबे बगैर रहेंगे नहीं और हमें भी डुबोएँगे

तो आपके पास गुरुकिल्ली है

आप डूबें वैसे नहीं हैं न

तब मैं आपके साथ बैठूँ

वे हाँ कहें तो बैठ जाना

दादाश्री हाँ लेकिन हम कहेंगे न कि आपमें साहब अक़्ल ज़रा कम है

इतना कहें तो तुरंत पता चल जाएगा कि ये डूबें वैसे हैं या नहीं

नहीं तो बिना गुरु किल्ली के सारे गुरु डूबे हैं

वे डूब गए परंतु सारे शिष्यों को भी डुबोया

फिर कहाँ जाएँगे उसका ठिकाना नहीं

गुरु के पास गुरुकिल्ली हो तो वह नहीं डूबेगा

क्योंकि पहले के समय में गुरुओं के गुरु होते थे न वे परंपरागत कूँची देते जाते थे

अपने शिष्यों से क्या कहते थे

तुम गुरु बनना लेकिन यह गुरुकिल्ली पास में रखना तो डूबोगे नहीं और डुबोओगे नहीं

तब आज के गुरुओं से पूछता हूँ कि किल्ली है कोई

कौन सी किल्ली है वह

और ये तो भटक मरे

ऊपर मत बैठने देना किसीको

यह गुरुकिल्ली तो भूल गए

गुरुकिल्ली का ही ठिकाना नहीं है

यह कलियुग है इसलिए डूबते हैं सत्युग में नहीं डूबते थे

प्रश्नकर्ता लेकिन गुरु तो तारणहार होते हैं वे डूबोते नहीं

दादाश्री नहीं लेकिन उनके पास गुरुकिल्ली हो तो वह तर जाएँगे और दूसरों को तारेंगे

यदि गुरुकिल्ली नहीं होगी न तो तू दु खी हो जाएगा

लोग तो वाह वाह करेंगे ही न लेकिन फिर उस गुरु का दिमाग़ फट जाता है

दिमाग़ की नस फट जाएगी फिर

मेरी क्या वाह वाही नहीं करते लोग

यानी गुरुकिल्ली हो तो काम का है

गुरुकिल्ली मतलब ऐसा कुछ खुद के पास साधन हो कि जो किल्ली डूबने ही नहीं दे

वह किल्ली नाम की समझ है और गुरु अकेले में प्राइवेटली देते हैं

जो महान गुरु हैं ज्ञानीपुरुष वे प्राइवेटली देते हैं कि आप इस तरह अपने शिष्यों के साथ काम लेना तो आप डूबोगे नहीं और दूसरे भी नहीं डूबेंगे

दादाश्री ज्ञानीपुरुष उसे ऐसी समझ दे देते हैं कि तू ऐसा है और यह सब ऐसा है

तू यह गुरु नहीं बन बैठा है

नामवाला गुरु बन बैठा है

तू अनामी है

तू लघुत्तम रहकर गुरुता करना तो तू तर जाएगा और दूसरे लोगों को तारेगा

यह तो गुरुकिल्ली उनके पास है नहीं और गुरु बन बैठे हैं

ज्ञानी के पास से गुरुकिल्ली समझ लेनी चाहिए

ज्ञानीपुरुष के पास से गुरुकिल्ली ले आनी चाहिए तो उसकी सेफसाइड रहेगी

प्रश्नकर्ता नहीं डूबेगा

दादाश्री लघुत्तम

यानी सिर्फ स्पर्श होगा परंतु डूबेगा नहीं

मेरे साथ बैठे हैं वे भी नहीं डूबेंगे

क्योंकि ज्ञानीपुरुष खुद लघुत्तम होते हैं और तरणतारण हो चुके होते हैं

खुद तर गए हैं और अनेक लोगों को तारने में समर्थ होते हैं

प्रश्नकर्ता गुरु औैर ज्ञानीपुरुष उन दोनों में फर्क समझाइए

दादाश्री ज्ञानीपुरुष और गुरु में तो बहुत फर्क है

गुरु हमेशा संसार के लिए ही बनाए जाते हैं

मुक्ति के लिए तो ज्ञानीपुरुष के बिना मुक्ति ही नहीं है

गुरु तो हमें संसार में आगे ले जाते हैं और खुद जैसे हैं वैसे हमें बना देते हैं

उससे आगे का नहीं दे सकते और मुक्ति तो ज्ञानीपुरुष देते हैं

इसलिए व्यवहार में गुरु की ज़रूरत है और निश्चय में ज्ञानीपुरुष की ज़रूरत है

दोनों की ज़रूरत है

गुरु तो क्या करते जाते हैं

खुद आगे पढ़ाई करते जाते हैं और पीछेवालों को भी पढ़ाते जाते हैं

मैं तो ज्ञानीपुरुष हूँ पढऩा पढ़ाना वह मेरा धंधा नहीं है

मैं तो यदि आपको मोक्ष चाहिए तो पूरा हल ला दूँ दृष्टि बदल दूँ

हम तो जो सुख हमने पाया है वह सुख उसे प्रदान करते हैं और हट जाते हैं

गुरु ज्ञान देते हैं और ज्ञानीपुरुष विज्ञान देते हैं

ज्ञान संसार में पुण्य बँधवाता है रास्ता बताता है सारा

विज्ञान मोक्ष में ले जाता है

गुरु तो एक प्रकार के अध्यापक कहलाते हैं

खुद ने कोई नियम लिया हुआ हो और वाणी अच्छी हो तो सामनेवाले को नियम में ले आते हैं

दूसरा कुछ नहीं करते

लेकिन उससे संसार में वह मनुष्य सुखी हो जाता है

क्योंकि वह नियम में आ गया इसलिए

ज्ञानीपुरुष तो मोक्ष में ले जाते हैं

क्योंकि मोक्ष का लाइसेन्स उनके पास है

दादाश्री हाँ बिना आसक्तिवाले चाहिए

आसक्तिवाले हों धन की आसक्ति हो या दूसरी आसक्ति हो वे किस काम के

हमें जो रोग है उन्हें भी वही रोग है

दोनों रोगी

अस्पताल में जाना पड़ता है

वे मेन्टल होस्पिटल के मरीज़ कहलाते हैं

किसी प्रकार की आसक्ति नहीं हो तो वैसे गुरु बनाए हुए काम के

रोज़ पकोड़ियाँ खाता हो या लड्डू खाता हो तो भी हर्ज नहीं है आसक्ति है या नहीं उतना ही देख लेना है

अरे कोई सिर्फ दूध पीकर रहते हों लेकिन आसक्ति है या नहीं उतना ही देखना है

यह तो सभी गुरुओं ने तरह तरह के नखरे दिखाए हैं

हम ये नहीं खाता हम वो नहीं खाता

छोड़ न झंझट

खा ले न जो है यहाँ

खाना नहीं मिल रहा या खा नहीं रहा है

ये तो लोगों के सामने नखरे दिखाने हैं

यह तो एक प्रकार का बोर्ड है कि हम ये नहीं खाता हम ये नहीं करता

यह तो लोगों को खुद की तरफ खींचने के लिए बोर्ड रखे हैं

मैंने ऐसे कई बोर्ड देखे हैं हिन्दुस्तान में

अर्थात् आसक्ति रहित गुरु चाहिए

फिर वह खाता हो या नहीं खाता हो हमें वह देखने की ज़रूरत नहीं है

जिसे किंचित् मात्र भी आसक्ति है वैसे को गुरु बनाएँ तो काम में नहीं आएँगे

ये आसक्तिवाले गुरु मिलने से तो पूरा जगत् टकरा टकराकर मर गया है

आसक्ति का रोग नहीं हो तब गुरु कहलाते हैं

किंचित् मात्र आसक्ति नहीं होनी चाहिए

प्रश्नकर्ता गुरु की गति गहन होती है इसलिए उनका पूर्व परिचय हो तब समझ में आता है नहीं तो बाह्य आडंबर से तो पता नहीं चलता

दादाश्री दस पंद्रह दिन साथ में रहें तब चंचलता का पता चलता है

जब तक वे चंचल हैं न तब तक अपने दिन नहीं फिरेंगे

वह अचल हो चुका होना चाहिए

दादाश्री ऐसा है न सद्गुरु किसे कहें वह बहुत बड़ी मुश्किल है

सद्गुरु किसे कहा जाता है शास्त्रीय भाषा में

कि सत् अर्थात् आत्मा वह जिसे प्राप्त हुआ है वैसे गुरु वे सद्गुरु

अर्थात् सद्गुरु वे तो आत्मज्ञानी ही सद्गुरु कहलाते हैं आत्मा का अनुभव हो चुका होता है उन्हें

सभी गुरुओं को आत्मज्ञान नहीं होता

इसलिए जो निरंतर सत् में ही रहते हैं अविनाशी तत्व में ही रहते हैं वे सद्गुरु

इसलिए सद्गुरु तो ज्ञानीपुरुष होते हैं

प्रश्नकर्ता श्रीमद् राजचंद्र कह गए हैं कि प्रत्यक्ष सद्गुरु के बिना मोक्ष होता ही नहीं

दादाश्री हाँ उनके बिना मोक्ष होता ही नहीं है

सद्गुरु कैसे होने चाहिए

कषाय रहित होने चाहिए जिनमें कषाय ही नहीं हो

हम मारें गालियाँ दें तो भी कषाय नहीं करें

सिर्फ कषाय रहित ही नहीं परंत ुबुद्धि खत्म हो जानी चाहिए

बुद्धि नहीं होनी चाहिए

इन बुद्धिशालियों के पास हम मोक्ष लेने जाएँ तो उनका ही मोक्ष नहीं हुआ है तो आपका कैसे होगा

यानी धौल मारें तो भी असर नहीं गालियाँ दें तो भी असर नहीं मार मारें तो भी असर नहीं जेल में डाल दें तो भी असर नहीं

द्वंद्व से परे होते हैं

द्वंद्व समझे आप

नफा नुकसान सुख दु ख दया निर्दयता

एक हो वहाँ दूसरा होता ही है उसका नाम द्वंद्व

इसलिए जो गुरु द्वंद्वातीत हों उन्हें सद्गुरु कहा जाता है

दादाश्री अपने हिन्दुस्तान में सभी धर्मोंवाले अपने अपने गुरु को सद्गुरु ही कहते हैं

कोई भी सिर्फ गुरु नहीं कहता

लेकिन उसका अर्थ लौकिक भाषा में है

संसार में जो बहुत ऊँचे चारित्रवाले गुरु होते हैं उन्हें अपने लोग सद्गुरु कहते हैं

लेकिन वास्तव में वे सद्गुरु नहीं कहलाते

उनमें प्राकृतिक गुण बहुत ऊँचे होते हैं खाने पीने में समता रहती है व्यवहार में समता होती है व्यवहार में चारित्रगुण बहुत ऊँचे होते हैं लेकिन उन्हें आत्मा प्राप्त नहीं हुआ होता

वे सद्गुरु नहीं कहलाते

ऐसा है न गुरु दो प्रकार के हैं

एक गाईड रूपी गुरु होते हैं

गाईड अर्थात् उन्हें हमें फॉलो करना होता है

वे आगे आगे चलते हैं मोनिटर की तरह

उन्हें गुरु कहा जाता है

मोनिटर मतलब आप समझे

जिन्हें हम फॉलो करते रहें

तिराहा आया हो तो वे डिसाइड करते हैं कि भाई इस रास्ते नहीं उस रास्ते चलो

तब हम उस रास्ते चलते हैं

उन्हें फॉलो करना होता है लेकिन वे अपने आगे ही होते हैं

कहीं पर नहीं होते हैं और दूसरे सद्गुरु

सद्गुरु मतलब हमें इस जगत् के सर्व दु खों से मुक्ति दिलवाते हैं

क्योंकि वे खुद मुक्त हो चुके होते हैं

वे हमें उनके फॉलोअर्स की तरह नहीं रखते और गुरु को तो फॉलो करते रहना पड़ता है हमें

उनके विश्वास पर चलना होता है

वहाँ अपनी अक्कलमंदी का उपयोग नहीं करें और गुरु के प्रति सिन्सियर रहें

जितने सिन्सियर हों उतनी शांति रहती है

गुरु तो हम यह स्कूल में पढऩे जाते हैं न तब से ही गुरु की शुरूआत हो जाती है तो ठेठ अध्यात्म के दरवाज़े तक गुरु ले जाते हैं

लेकिन अध्यात्म में प्रविष्ट नहीं होने देते

क्योंकि गुरु ही अध्यात्म ढूँढ रहे होते हैं

अध्यात्म अर्थात् क्या

आत्मा के सम्मुख होना वह

सद्गुरु तो हमें आत्मा के सम्मुख कर देते हैं

यह तो लोग गुरु को समझे ही नहीं हैं

हिन्दुस्तान के लोग गुरु को समझे ही नहीं कि गुरु किसे कहा जाता है

जो भी कोई भगवा कपड़ा पहनकर बैठा हो तो यहाँ लोग उसे गुरु कह देते हैं

शास्त्र के दो चार शब्द बोले इसलिए उसे अपने लोग गुरु कह देते हैं परंतु वे गुरु नहीं हैं

एक व्यक्ति कहता है मैंने गुरु बनाए हैं

तब मैंने कहा तेरे गुरु कैसे हैं

यह मुझे बता

आर्तध्यान रौद्रध्यान नहीं होते हों वे गुरु

उसके अलावा दूसरे किसीको गुरु कहना गुनाह है

उन्हें साधु महाराज कहा जा सकता है त्यागी कहा जा सकता है परंतु गुरु कहना गुनाह है

नहीं तो फिर सांसारिक समझ चाहिए तो वकील भी गुरु है सभी गुरु ही हैं न फिर तो

जो गुरु धर्मध्यान करवा सकें वे गुरु कहलाते हैं

धर्मध्यान कौन करवा सकता है

जो आर्तध्यान छुड़वा सके और रौद्रध्यान छुड़वा सके वे धर्मध्यान करवा सकते हैं

जिस गुरु को कोई गालियाँ दे तब रौद्रध्यान नहीं हो तो समझना कि यहाँ पर गुरु बनाने जैसे हैं

आज आहार नहीं मिला हो तो आर्तध्यान नहीं हो तब समझना कि यहाँ पर गुरु बनाने जैसे हैं

दादाश्री सद्गुरु के पास तो भगवान का प्रतिनिधित्व होता है

जो मुक्त पुरुष हों वे सद्गुरु कहलाते हैं

गुरु को तो अभी तरह तरह के सभी कर्म खपाने बाकी होते हैं और सद्गुरु ने तो काफी कुछ कर्म खपा दिए होते हैं

इसलिए आर्तध्यान रौद्रध्यान नहीं होते हों तो वे गुरु और हाथ में मोक्ष दे दें वे सद्गुरु

सद्गुरु मिलने मुश्किल हैं

परंतु गुरु मिल जाएँ तो भी बहुत अच्छा

दादाश्री सद्गुरु मिलें तो उसके जैसा कुछ भी नहीं और सद्गुरु नहीं मिलें तो फिर गुरु तो बनाने ही चाहिए

भेदविज्ञानी हों उन्हें सद्गुरु कहा जाता है

दादाश्री गुरु हों तो रास्ते पर आएगा न

और सद्गुरु मिल जाएँ तब तो कल्याण ही कर दें

फिर गुरु उन्हें मिले हों या नहीं मिले हों परंतु सद्गुरु तो सबका कल्याण ही कर देते हैं

यदि गुरु मिलें तो वह सही रास्ते पर आ जाता है फिर उसे समय नहीं लगता

कोई उल्टे लक्षण नहीं होते हैं उसमें

परंतु सद्गुरु का जिसे हाथ लगे उसका कल्याण ही हो गया

दादाश्री सद्गुरु को खोजना मुश्किल है न

वैसे सद्गुरु तो यहाँ मिल सकें ऐसा है नहीं

वह आसान चीज़ नहीं है

सद्गुरु ज्ञानी होने चाहिए

ज्ञानी नहीं हों वैसे गुरु होते हैं लेकिन वे पूरापूरा समझते नहीं हैं

ज्ञानी तो संपूर्ण समझा देते हैं आपको सारी हक़ीक़त समझा देते हैं

कोई चीज़ जाननी बाक़ी नहीं रहे उन्हें ज्ञानी कहते हैं

सिर्फ जैनों का ही जानें ऐसा नहीं हो सभी कुछ जानते हों उन्हें ज्ञानी कहते हैं

उन्हें मिलें तो नवें भव में मोक्ष हो जाएगा या फिर दो जन्मों में भी मोक्ष हो सकता है

पर सद्गुरु मिलने मुश्किल हैं न

अभी तो सच्चे गुरु भी नहीं हैं वहाँ सद्गुरु कहाँ से होंगे फिर

और श्रीमद् राजचंद्र जैसे सद्गुरु थे तब लोग उन्हें पहचान नहीं पाए

दादाश्री वह तो प्रकट दीये जैसे पहचानवाले होते हैं

उनकी सुगंध आती है बहुत सुगंध आती है

दादाश्री ऐसा है कि यदि खुद जौहरी हो तो उन्हें वह आँखों से ही पहचान सकता है

उनके वाणी वर्तन और विनय मनोहर होते हैं

मन का हरण कर लें वैसे होते हैं

हमें ऐसा लगता है कि ओहो

अपने मन का हरण हो रहा है

सारी जाँच करना कि अपनी शंका है वह सच है या गलत है

हर प्रकार से अपनी बुद्धि से जितना नापा जा सके उतना नाप लेना चाहिए फिर भी यदि कभी हमें अनुकूल नहीं आए तो हम दूसरी दुकान में जाएँ उन्हें छेड़े बिना

हम दूसरी दुकान खोजें तीसरा दुकान खोजें ऐसा करते करते किसी दिन सही दुकान मिल जाएगी

दादाश्री साधना उसका अंत होता है

छह महीने या बारह महीने होता है

उसमें चालीस चालीस वर्ष नहीं चले जाते

प्रश्नकर्ता वह तो जैसी जिसकी योग्यता

दादाश्री योग्यता की ज़रूरत ही नहीं है

यदि सद्गुरु मिल जाएँ तो योग्यता की ज़रूरत नहीं है

सद्गुरु नहीं मिले हैं तो योग्यता की ज़रूरत है

सद्गुरु यदि बी

ए

हुए हों तो उतनी योग्यता और बी

बी

टी

हुए हों तो उतनी योग्यता

उसमें अपनी योग्यता की ज़रूरत ही नहीं होती

दादाश्री नहीं

सद्गुरु मिल गए तब किसी योग्यता की ज़रूरत नहीं होती

सद्गुरु मिल गए वही उसका बड़ा पुण्य कहलाता है

दादाश्री नहीं वे साधन बताते हैं वही सब करने होते हैं

परंतु योग्यता की ज़रूरत नहीं है

योग्यतावाले को तो मन में ऐसा होता है कि अब मैं तो समझता ही हूँ न

योग्यता तो उल्टा कैफ चढ़ाती है

योग्यता हो तो फेंक देने जैसी नहीं है वह हो तो अच्छी बात है

लेकिन हमें यह समझना चाहिए कि कैफ हो तो कैफ निकाल देना चाहिए

उस योग्यता और सद्गुरु का मेल होने में बीच में कैफ बाधक है

योग्यतावाले दूरी बनाए रखते हैं

वह कम योग्यतावाला हो न वह तो ऐसा ही कहेगा साहब मुझमें तो अक्कल नहीं है अब आपके सिर पड़ा हूँ

आप हल ले आइए

तो फिर सद्गुरु खुश हो जाते हैं

उतना ही कहने की ज़रूरत है

सद्गुरु और कुछ नहीं माँगते हैं या और कोई योग्यता खोजते नहीं हैं

दादाश्री अर्पणता चाहिए पूर्ण रूप से

दादाश्री तो काम हो जाए

समर्पण भाव हो तो सारा काम हो जाए

फिर कुछ भी बाक़ी रहेगा ही नहीं

परंतु मन वचन काया सहित समर्पण चाहिए

दादाश्री वह तो आपको वैसे विराट पुरुष लगें तो करना

आपको लगे कि ये महान पुरुष हैं और उनके सभी कार्य वैसे विराट लगें तो हम उन्हें समर्पण करें

दादाश्री परोक्ष से भी विकास होता है और प्रत्यक्ष मिलें तब तो कल्याण ही हो जाता है

परोक्ष विकास का फल देता है और प्रत्यक्ष के बिना कल्याण नहीं होता

समपर्ण करने के बाद हमें कुछ भी करना नहीं होता

अपने यहाँ बालक जन्मे तो बालक को कुछ भी करना नहीं होता उसी तरह समर्पण करने के बाद हमें कुछ भी नहीं करना होता है

आप जिसे बुद्धि समर्पण करो उनमें जो शक्ति हो वह आपको प्राप्त हो जाती है

समर्पण किया और उनका सब हमें प्राप्त हो जाता है

जैसे एक टंकी के साथ दूसरी टंकी को ज़रा पाईप से जोइन्ट करें न तो एक टंकी में चाहे जितना माल भरा हुआ हो लेकिन दूसरी टंकी में उतना ही लेवल आ जाता है

समर्पण भाव उसके जैसा कहलाता है

जिनका मोक्ष हो गया हो जो खुद मोक्ष का दान देने निकले हों वही मोक्ष दे सकते हैं

वैसे हम मोक्ष का दान देने निकले हैं

हम मोक्ष का दान दे सकते हैं

वर्ना कोई मोक्ष का दान नहीं दे सकता

दादाश्री सद्गुरु वे रिलेटिव हैं परंतु सद्गुरु जो ज्ञान देते हैं वह रियल है

उस रियल से आत्मरंजन होता है

वह आनंद चरम कोटि का आनंद है

रियल अर्थात् परमानेन्ट वस्तु और रिलेटिव अर्थात् टेम्परेरी वस्तुएँ

रिलेटिव से मनोरंजन होता है

दादाश्री हाँ

सद्गुरु में ज्ञान हो तो आत्मरंजन का साधन और ज्ञान नहीं हो तो मनोरंजन का साधन

आत्मज्ञानी सद्गुरु हों तो आत्मरंजन का साधन

आत्मज्ञानी सद्गुरु हों न तब तो निरंतर याद ही रहते हैं वही रियल और नहीं तो सद्गुरु याद ही नहीं आते हैं

दादाश्री यह तो व्यवहार में बिल्कुल सच है

गुरु को सौंपें तो एक जन्म उसका अच्छा निकलता है

क्योंकि गुरु को सौंपा मतलब कि गुरु की आज्ञा अनुसार चला तो खुद को दु ख नहीं आता

दादाश्री जितनी भी शक्तियाँ हैं न उन सभी में तथ्य ही होता है अतथ्य नहीं होता

वे सारी शक्तियाँ हैं औैर शक्तियाँ हमेशा कुछ वर्षों तक चलती हैं और फिर धीरे धीरे खत्म हो जाती हैं

दादाश्री शिष्य को तो गुरु की कृपा प्राप्त करने के लिए गुरु को राज़ी रखना चाहिए और कुछ नहीं

जिस तरह से राज़ी रहते हों उस तरह से राज़ी रखना

राज़ी करें तब कृपा होती ही है उन पर

परंतु कृपा कितनी प्राप्त होती है

जितना टँकी में हो जितने गेलन हों उतने गेलन के अनुसार हमारा होता है

कृपादृष्टि मतलब क्या

उनके कहे अनुसार कर रहा हो तब वे राज़ी रहते हैं वही कृपादृष्टि

उनके कहने से उल्टा करे तब नाराज़गी होती है

दादाश्री नहीं वह तो कृपा कितनों पर नहीं भी होती वे टेढ़ा करें तो नहीं भी होती

प्रश्नकर्ता तो फिर वे गुरु कैसे कहलाएँगे

गुरु की दृष्टि तो सभी के ऊपर एक सी रहनी चाहिए

दादाश्री हाँ समान रहनी चाहिए

पर वह मनुष्य गुरु के साथ टेढ़ापन करता हो तो वे क्या करें

वह तो ज्ञानी हो तब समान होता है लेकिन ये गुरु हैं तो ज़रा आप टेढ़ापन करो तो आपके ऊपर इतनी सारी उल्टी कर देंगे

फिर भी भीतर है वैसा खुद का फल खुद को मिलता है

खुद उल्टा करे तो उल्टा ही फल मिलता है

जब कि ज्ञानीपुरुष तो वीतराग कहलाते हैं

उन्हें आप धौल मारो तो भी वे आप पर समान दृष्टि नहीं तोड़ते

लेकिन जो आप देंगे एक गाली दो तो सौ गालियाँ वापिस मिलेंगी एक फूल चढ़ाओ तो सौ फूल वापिस मिलेंगे

दादाश्री कृपा की ज़रूरत है

जिनका अहंकार जा चुका हो वैसे सद्गुरु की कृपा की ज़रूरत है तब अहंकार जाएगा

अहंकार का नाश करना वह गुरु का काम नहीं है

वहाँ तो ज्ञानी का काम है

गुरु वैसा ज्ञान कहाँ से लाएँगे

उनका ही अहंकार जाता नहीं न

जिनकी ममता नहीं गई है उनका अहंकार कब जाएगा फिर

वह तो ज्ञानीपुरुष मिलें और जिन ज्ञानी में बुद्धि का छींटा भी नहीं हो तब वहाँ पर उनके पास अहंकार चला जाता है

दादाश्री गुरु द्वारा तो नष्ट नहीं होते लेकिन ज्ञानीपुरुष होने चाहिए भेदविज्ञानी

जिनमें अहंकार नहीं हो बुद्धि नहीं हो वैसे भेदविज्ञानी हों तो कर्म नाश होते हैं

गुरु तो अहंकारी हों तो तब तक वैसा कुछ भी नहीं होता

प्रश्नकर्ता शास्त्रों में भी ऐसा लिखा है कि गुरुगम्य ही जानना चाहिए

दादाश्री हाँ पर गुरुगम्य मतलब क्या

आत्मा दिखे तभी वह गुरुगम्य कहलाएगा

नहीं तो गुरुगम्य तो सभी बहुत लेकर फिरते हैं

आत्मा का अनुभव करवाए तो गुरुगम्य काम का है

वह तो आगम और आगम से ऊपर हों वैसे ज्ञानीपुरुष मिलें तब गुरुगम्य प्राप्त होता है

दादाश्री सभी गिर नहीं पड़ें फिसल नहीं जाएँ उसके लिए किया है

गुरुमंत्र यदि जतन से सँभालकर रखे तो वे फिसल नहीं पड़ेंगे न

परंतु उससे मोक्ष का कुछ भी प्राप्त नहीं करते वे

दादाश्री वह दिया हुआ हो तो अच्छा फल देता है

वह तो जैसे जैसे गुरु

वह गुरु पर आधारित है

दादाश्री ऐसा है न ध्यान तो इसलिए करना है कि गुरु के सुख के लिए नहीं हमें एकाग्रता रहे और शांति रहे उसके लिए ध्यान करना है

परंतु गुरु कैसे होने चाहिए

अपना ध्यान टिके वैसे होने चाहिए

दादाश्री भगवान के ध्यान की खबर ही नहीं वहाँ क्या करोगे

उसके बजाय तो गुरु का ध्यान करना

उनका मुँह दिखेगा तो सही

इसमें सद्गुरु का ध्यान करना अच्छा है

क्योंकि भगवान तो दिखते नहीं है

भगवान तो मैं दिखाऊँ उसके बाद भगवान का ध्यान होगा

तब तक जिन्हें सद्गुरु माना हो उनका ही ध्यान करना

मैं भगवान दिखा दूँ उसके बाद आपको करना नहीं पड़ेगा

जब तक करना है तब तक भटकना है

कुछ भी करना पड़े ध्यान भी करना पड़े तब तक भटकन है

ध्यान सहज होता है

सहज मतलब कुछ भी नहीं करना पड़ता अपने आप ही हुआ करता है तब समझना कि छुटकारा हुआ

दादाश्री तो किसी गुरु से कहना वे हिम्मत बँधवाएँगे

और यदि गुरु राज़ी नहीं हों तो मेरे पास आना

गुरु राज़ी रहें तो मेरे पास मत आना

राजीपा गुरुजनों की कृपा और प्रसन्नता ही लेना है इस जगत् में

क्योंकि उन्हें तो गुरु को क्या ले जाना है

सिर्फ आपको किस तरह से सुख प्राप्त हो कैसे आपको आत्मज्ञान प्राप्त हो वैसा उनका हेतु होता है

प्रश्नकर्ता कईं गुरु शक्तिपात करते हैं इसलिए यह प्रश्न पूछा है

दादाश्री वह ठीक है

वैसा करते हैं वह मैं भी जानता हूँ लेकिन उसकी ज़रूरत कब तक है

वे गुरु शक्तिपात करके फिर खिसक जाते हैं ठेठ तक साथ नहीं देते

वैसा किस काम का

साथ दें वे गुरु अपने

दादाश्री मोह तो सिर्फ मेरा कल्याण करते हैं उतना ही

कोई कहेगा गुरु में अभिनिवेष अपने मत को सही मानकर पकड़े रखना हो तो

उसमें हर्ज नहीं

वह तो अच्छा है

गुरु जहाँ तक पहुँचे हों वहाँ तक तो पहुँचाएँगे

हम जिनकी भजना करें वे जहाँ तक गए होंगे वहाँ तक हमें पहुँचाएँगे

दादाश्री हाँ हमारे शास्त्र इतना ही कहते हैं कि जहाँ तक गए हों वहाँ तक पहुँचाएँगे

फिर आगे दूसरे मिल आएँगे

और गुरु तो वे जितनी सीढिय़ाँ चढ़े हों उतनी सीढिय़ाँ हमें चढ़ा देते हैं

वे दस सीढिय़ाँ चढ़े हों और हम सात ही सीढिय़ाँ चढ़ पाए हों तो हमें दस तक पहुँचा देते हैं

अभी तो कितनी ही करोड़ों सीढिय़ाँ चढऩी हैं

ये कुछ थोड़ी बहुत सीढिय़ाँ नहीं हैं

दादाश्री हाँ ऐसा भी होता है

गुरु वहीं के वहीं रहे हों और शिष्य आगे बढ़ जाएँ

दादाश्री हाँ पुण्य का ही उदय

अरे गुरु सिखलाएँ तब कितने ही शिष्य तो कहते हैं ऐसा नहीं होता है

तब उसे क्या होना चाहिए वह विचार आता है कि ऐसा होना चाहिए

तो तुरंत ही ज्ञान उत्पन्न हो जाता है

ऐसा नहीं होता वैसा उसे नहीं हुआ होता तो उसे ज्ञान नहीं होता

दादाश्री हाँ वह निमित्त मिला उतना ही

इसके कारण उसके ज्ञान का उदय हुआ कि ऐसा होता है ऐसा नहीं होता इसलिए ऐसा ही है

यानी पुण्य तरह तरह के चेन्ज परिवर्तन ला देता है

पुण्य क्या नहीं करता

इसके लिए पुण्यानुबंधी पुण्य चाहिए

जैसे कि कपड़ा है तो उसे धोने के लिए साबुन डालते हैं वह साबुन क्या करता है

कपड़े का मैल निकाल देता है परंतु साबुन खुद का मैल डाल देता है

तो साबुन का मैल कौन निकालेगा

फिर लोग क्या कहते हैं

अरे साबुन डाला पर टीनोपोल नहीं डाला

परंतु टीनोपोल किसलिए डालूँ

साबुन से मैल निकाल दिया न

अब अपने वहाँ यह टीनोपोल पाउडर होता है न उसे अपने लोग क्या समझते होंगे

वे ऐसा समझते होंगे कि यह कपड़े सफेद करने की दवाई होगी

वह तो उस साबुन का मैल निकालता है पर अब टीनोपोल खुद का मैल छोड़ गया

उसके लिए दूसरी दवाई ढूँढ निकाल तो टीनोपोल का मैल जाएगा

इस दुनिया में हर एक अपना अपना मैल छोड़ता जाता है

ऐसा कब तक चलता रहता है

जब तक शुद्ध स्फटिक दवाई नहीं हो तब तक

क्रमिक मार्ग में गुरू सिर पर होते हैं और शिष्य उनके साथ में दो या तीन होते हैं अधिक नहीं होते

खरे शिष्य जो गुरु के पदचिन्हों पर चलनेवाले होते हैं वैसे दो या तीन होते हैं वैसा अपने शास्त्रों ने विवेचन किया है

वह मार्ग तो बहुत कठिन होता है न

वहाँ कहेंगे भोजन की थाली दूसरे को दे देनी पड़ेगी

तब कहे नहीं साहब मुझे नहीं पुसाएगा

मैं तो अपनी तरह से घर चला जाऊँगा

कौन वहाँ खड़ा रहे

इसलिए शास्त्रकारों ने कहा है कि क्रमिक मार्ग के हर एक ज्ञानी के पीछे दो चार शिष्य हुए हैं कुछ अधिक नहीं हुए

प्रश्नकर्ता सब जाने लगेंगे

सुबह जब वे शिष्य आएँ तब उनमें से दो शिष्यों ने कहे अनुसार किया होता है और एक शिष्य से नहीं हुआ हो तो वहाँ गुरु के पास जाकर बैठता है पर उसके मुँह पर से साहब पहचान जाते हैं कि इसने कुछ भी नहीं किया है

उसका मुँह ही कुछ नहीं किया वैसा दिखता है

इसलिए साहब भीतर मन ही मन में चिढ़ते रहते हैं कि कुछ भी नहीं करता कुछ नहीं करता है

शिष्य ने कंठस्थ नहीं किया हो तो वहाँ पर उसे झिड़कता है फिर

गुरु की आँखें लाल हो जाती हैं आँखें लाल ही रहती हैं

यह शिष्य कुछ करे वैसा नहीं है इसलिए गुरु चिढ़ते रहते हैं और वह शिष्य डरता रहता है

अब इसका ठिकाना कैसे पड़े

इसलिए वहाँ तीन ही शिष्य जो उनके पीछे लगे हों उतने ही शिष्यों को पोषण दे सकते हैं वे

दूसरे सब लोग तो दर्शन करके चले जाते हैं

दादाश्री एकाकार रहें तब तो दोनों का कल्याण हो जाए

परंतु शिष्य से प्याले फूटें तो गुरु चिढ़े बगैर रहते नहीं

वर्ना यदि गुरु शिष्य कभी ऐसे पुण्यशाली हों और दोनों एकाकार रहें तो दोनों का कल्याण हो जाए

परंतु ऐसा रहता नहीं है

अरे घड़ीभर भी खुद अपने ऊपर ही उसे विश्वास नहीं आता ऐसा यह जगत् है तो शिष्यों का तो विश्वास आता होगा

एक दिन दो प्याले फोड़ डाले हों न तो गुरु ऐसे लाल आँखें दिखाते रहते हैं

दादाश्री गुरु का नि स्वार्थ नहीं होता

जगत् में नि स्वार्थ मनुष्य कोई होता नहीं है

वह नि स्वार्थी दिखते ज़रूर हैं पर जहाँ तहाँ से स्वार्थ करके और सारी उसीकी तैयारी ही कर रहे होते हैं

वे सभी स्वार्थी हैं पोलवाला है सारा

वह तो जिसे ज़रा समझ में आ जाएगा वह पहचान जाएगा

बाक़ी शिष्य और गुरु वे दोनों झगड़ते ही रहते हैं दोनों की जमी हुई ही होती है पूरा दिन

हम गुरु से ज़रा मिलने जाएँ और कहें कि क्यों यह क्या है

तब वे कहेंगे वह अच्छा नहीं है

शिष्य इतना अधिक खराब मिला है

हम वह बात शिष्य को नहीं बताएँ और फिर शिष्य से हम पूछें कि क्यों भाई यह क्या था

तब वह कहेगा ये गुरु बेकार मिले हैं इतने खराब मिले हैं

इसमें किसकी बात सच्ची

इसमें उनका दोष नहीं है

क्योंकि काल ऐसा आया है

उस काल के कारण यह सब खड़ा हो गया है

पर ऐसा काल आए तब ज्ञानीपुरुष अवतरित होते हैं

शिष्य को चाहे जितना आता हो पर ये गुरु सब ऐसे ही मिलेंगे न

कलियुग के गुरु कैसे होते हैं

शिष्य है वह कहे कि मैं तो अज्ञानी हूँ मैं कुछ नहीं जानता फिर भी गुरु इस बेचारे को मारते रहते हैं आगे नहीं बढऩे देते

वे गुरु मरते दम तक भूलें निकालते हैं और शिष्य को परेशान कर देते हैं तेल निकाल देते हैं

फिर भी शिष्य को सँभालकर रखनेवाले कुछ ही होते हैं

परंतु अंत में बारुदखाना ही मानना अंत में एक दिन फोड़े बगैर रहेगा ही नहीं

इस काल में शिष्यों की सहनशक्ति नहीं है गुरु में वैसी उदारता नहीं है

नहीं तो गुरु में तो बहुत उदारता चाहिए बहुत उदार मन चाहिए

शिष्य का सबकुछ निबाह लेने की उदारता होनी चाहिए

वर्ना गुरु के आधार पर तो कितनी ही जगह पर शिष्य होते हैं

शिष्यों की पूरी चिंता उस गुरु के सिर पर होती है

इस तरह से शिष्यों का चलता रहता है

कुछ सच्चे गुरु होते हैं संसार में और कुछ शिष्यों का गुरु के सिर पर बोझ होता है और गुरु जो करें वह ठीक

इसलिए जिम्मेदारी नहीं और शांति रहती है

कोई आधार तो चाहिए ही न

निराधारी मनुष्य जी नहीं सकता

दादाश्री शिष्य तो वह बेचारा क्या कर सकता है

वह यदि कर सकता तो फिर गुरु की ज़रूरत ही नहीं रहती न

शिष्यों से खुद से कुछ भी नहीं हो सकता

वह तो गुरु की कृपा से सब आगे ही आगे बढ़ता जाता है

मनुष्य खुद अपने आप कुछ भी नहीं कर सकता

दादाश्री कुछ भी नहीं करना है सिर्फ विनय रखना है

इस जगत् में करने को है ही क्या

विनय करना है

क्या करना है

यह कोई खिलौने नहीं खेलने या घर के देव स्थान की मूर्तियों को स्नान कराना नहीं है ऐसा वैसा कुछ भी नहीं करना है

दादाश्री गुरु उनके गुरु के पास से लाए होते हैं वह उसे देते हैं

आमने सामने सब वह तो आगे से चला आया है

इसलिए गुरु जो दें वह शिष्य को ले लेना है

प्रश्नकर्ता कुछ गुरु कहते हैं कि अभ्यास करो तो वस्तु मिलेगी

दादाश्री हाँ वह तो बहुत सारे लोग ऐसा ही कहते हैं न

क्या कहेंगे

यह करो वह करो वह करो

करने से कभी भी भ्रांति जाती है

गुरु के कहे अनुसार करना ही हो तब तो वैसा हो ही नहीं न

किसीने कहा हो कि आज सच बोलो

पर सच बोला ही नहीं जाता न

वह तो पुस्तकें भी बोलती हैं

पुस्तक कहाँ नहीं बोलतीं

उससे कुछ होता नहीं न

पुस्तक में कहते हैं न कि प्रमाणिकता से चलो

पर कोई चला है

लाखों जन्मों तक वही का वही किया है दूसरा कुछ किया ही नहीं

तोड़फोड़ तोड़फोड़ तोड़फोड़ ही की है

प्रश्नकर्ता गुरु पालन करें तब अपने से पाल ही लिया जाता है वह मेरे दिमाग़ में नहीं उतरता है

आपकी समझ में नहीं आया

मैं आपसे कहूँ कि यह आप छोड़ दो और आपसे वह नहीं छूटे तो समझना कि मुझमें दोष है

आपसे नहीं छूटे तो आपको मुझमें दोष निकालना चाहिए

आपके सभी प्रयत्न करने के बाद भी नहीं छूटे तो उसका कारण क्या है

मुझमें दोष है उस कारण से ही

हाँ उसका कारण यह कि कहनेवाले में दोष होना ही चाहिए

आप ऐसा करो यह करो ऐसा कोई वचनबलवाला कहे तो चलेगा

यह तो वचनबल ही नहीं है इसलिए शिष्य की गाड़ी आगे चलती ही नहीं

यह तो एक प्रकार की कहने की बुरी आदत पड़ी हुई होती है

प्रश्नकर्ता हमारे पक्ष की बात है यह

दादाश्री सामनेवाले व्यक्ति को देखने की ज़रूरत नहीं है

गुरु अच्छे होने चाहिए

व्यक्ति तो है ही वैसा समर्थ नहीं है बेचारा

वह तो ऐसा ही कहता है न कि साहब मैं समर्थ नहीं हूँ इसीलिए आपके पास आया हूँ

मुझे करना होता होगा

तब वे कहें नहीं तुझे करना पड़ेगा

तो वे गुरु ही नहीं हैं

यदि मुझे करना पड़ता तो आपकी शरण में किसलिए आऊँ

आपके जैसे समर्थ को किसलिए ढूँढ निकालता

इतना ज़रा आप सोचिए तो सही

आप समर्थ हैं और मैं तो कमज़ोर ही हूँ

मुझसे होता ही नहीं इसलिए तो आपकी शरण में आया और मुझमें यदि कत्र्तापन रहनेवाला हो तो आप कैसे हैं

कमज़ोर ही कहलाएँगे न

आप समर्थ कहलाएँगे ही किस तरह

क्योंकि समर्थ तो सबकुछ कर सकते हैं

प्रश्नकर्ता हाँ कहना चाहिए

ज्ञान कोई लुटाता ही नहीं न

अरे इसे लुटाने दो न

तो लोगों को शांति हो ठंडक हो जाए

यहाँ मेरे पास रखकर मैं क्या करूँ

उसे दबाकर सो जाऊँ

और नियम ऐसा है कि इस दुनिया में हर एक चीज़ जो दी जाती है वह कम होती है और सिर्फ ज्ञान ही देने से बढ़ता है

वैसा स्वभाव है

सिर्फ ज्ञान ही

दूसरा कुछ भी नहीं

दूसरा सबकुछ तो घटता है

मुझे एक व्यक्ति कहता है कि आप जितना जानते हैं उतना क्यों कह देते हैं

थोड़ा कुछ डिब्बी में नहीं रखते

मैंने कहा अरे देने से तो बढ़ता है

मेरा बढ़ता है और उसका भी बढ़ता जाता है तो क्या नुकसान होता है मेरा

मुझे ज्ञान डिब्बी में रखकर गुरु नहीं बन बैठना है कि यह मेरे पैर दबाता रहे

वह तो फिर अंग्रेज़ों के जैसा हाल हुआ कि उन्होंने सभी ज्ञान डिब्बी में रखे थे

के भी उन लोगों ने पैसे लिए

उससे ही तो यह सारा ज्ञान पानी में डूब जाएगा

अपने लोग देते रहते थे खुले हाथों से देते ही रहते थे

आयुर्वेद का ज्ञान देते थे फिर दूसरा ज्योतिषविद्या का ज्ञान देते थे अध्यात्मज्ञान देते थे सब खुले हाथों से देते थे

और यह कोई छुपाकर रखा हुआ ज्ञान नहीं है

यहाँ व्यवहार में तो गुरु गाँठ में बाँधकर रखते हैं थोड़ा

कहेंगे शिष्य टेढ़ा है वह चढ़ बैठेगा

विरोध करेगा तब मैं क्या करूँगा

क्योंकि उस गुरु को व्यवहार का सुख चाहिए

खाने पीने का दूसरा सबकुछ चाहिए

पैर दुखते हों तो शिष्य पैर दबा देते हैं

वह शिष्य यदि उनके जैसा हो जाएगा तो फिर वह पैर नहीं दबाएगा तो क्या होगा

इसलिए वह थोड़ी चाबियाँ अपने पास रहने देते हैं

इसलिए गुरुओं का मत ऐसा होता है कि मुझे दस प्रतिशत अपने पास अमानत रखना चाहिए और फिर बाक़ी का दे दें

उनके पास सेवन्टी परसेन्ट होता है उसमें से दस प्रतिशत अमानत रखते हैं

जब कि मेरे पास पंचानवे प्रतिशत है वह सारा ही आपको दे देता हूँ

आपको अनुकूल आया तो अनुकूल नहीं तो जुलाब हो जाएगा

परंतु उससे कुछ फायदा तो होगा न

अर्थात् अभी गुरु ऐसे घुस गए हैं कि भीतर डिब्बी में रखकर फिर दूसरा देते हैं

इसलिए शिष्य समझता है कि अभी हमें नहीं मिलता है धीरे धीरे मिलेगा

फिर गुरु धीरे धीरे देते हैं

पर दे दे न यहीं से ताकि इसका सब ठीक हो जाए

कोई देता ही नहीं न

लालची लोग देते होंगे

संसार का जिसे लालच है वह मनुष्य जितना जानता है उतना पूरा पूरा ज्ञान साफ साफ दे नहीं सकता

लालच के कारण रहने देता है अपने पास

प्रश्नकर्ता अभी कुछ गुरु हैं जो सिर्फ नाम के गुरु हैं पर वे ऐसे तो वास्तव में लोगों का शोषण ही कर रहे होते हैं

दादाश्री और एकाध दो गुरु सच्चे हों सीधे हों तब उनमें योग्यता नहीं होती

प्रपंची गुरु तो बहुत होशियार होते हैं और तरह तरह के ऐसे भेष बनाते हैं

तब मैंने कहा भाई चल तुझे हम रक्षण देंगे

तू बरबाद नहीं होगा

उसकी खुद की भूल से ही ले गए हैं न

उसे लालच होगा कुछ तभी न

कोई लालच होगा तभी ये गुरु बनाए थे न

तभी पैसे देगा न

यानी लालच से ही ठगे गए हैं और ये सारे लोग हाथ में आया हुआ फिर छोड़ते नहीं हैं

दूषमकाल के लोग उन्हें खुद की अधोगति होगी या क्या होगा उसकी कुछ पड़ी ही नहीं है

शिकार हाथ में आना चाहिए

पर वे तो क्या कहते हैं

हमारे भगत हैं

वैसा कहते हैं न

शिकार नहीं कहते उतना अच्छा है और वे शिकारी लोग तो शिकार कहते हैं

फिर मैंने उसे कहा तूने गुरु के नाम पर कुछ किया था

तब उसने कहा हाँ उनका जो फोटो पूजता था वह फिर तापी नदी में डाल आया

ऐसे बहुत परेशान किया इसलिए मुझे चिढ़ हो गई

इसलिए डाल आया

अरे पर तूने उसे पूजा किसलिए

पूजा की तो फिर तापी में किसलिए डाल आया

गुरु ने तुझे ऐसा नहीं कहा था कि तू पूजकर तापी में डाल आना

नहीं तो पूजता ही नहीं पहले से

पूजा है इसलिए जोखिमदारी तेरी हुई

यह तो तूने गलत किया

कल तक भजना कर रहा था और दूसरे दिन डाल दिया पानी में

भजनेवाला तू और उखाड़नेवाला भी तू

खुद ही भजनेवाला और खुद ही उखाड़नेवाला

यह गुनाह है या नहीं

तो फिर भजता किसलिए था

यदि उखाड़ना हुआ तो विधिपूर्वक उखाड़ो

ऐसा नहीं चलेगा

क्योंकि जिस फोटो की आज तक पूजा कर रहा था उसे कल नदी में विसर्जित कर दें तो वह हिंसा हुई कहलाएगी

हम समझें कि यह भगवान का फोटो है और फिर हम यदि डूबो दें तो अपनी भूल है

नहीं जानते हों अनजान हों तो हर्ज नहीं है

प्रश्नकर्ता ऐसा तो भीतर सबकुछ होता है

दादाश्री पर यदि चिंता हो तो फिर जिनका नाम लेने से चिंता हो उनका नाम लेने का अर्थ ही क्या है

मीनिंगलेस

क्रोध मान माया लोभ होते हों तो वह नाम लेने का क्या अर्थ

ऐसे तो यह क्रोध मान माया लोभ औरों को भी होते हैं और हमें भी होते हैं यानी आपका काम पूरा नहीं हुआ है

तो फिर अब दुकान बदलो

कब तक एक ही दुकान में पड़े रहें

आपको पड़े रहना हो तो पड़े रहना वर्ना यह सब तो मैं आपको सलाह दे रहा हूँ

आपका काम हो चुका हो तो वहाँ पर हर्ज नहीं है

उस एक ही जगह पर रहे तो दूसरी जगह पर दख़ल करने की ज़रूरत नहीं है

मतभेद पड़ता हो तो फिर गुरुदेव ने क्या किया

गुरुदेव वे कि सभी दु ख टाल दें

प्रश्नकर्ता उन गुरु की बात ठीक है पर यह तो मैंने स्वयं की अंत स्फूरणा से मैंने गुरु को स्वीकार किया था

प्रश्नकर्ता पर मुझे मेरी प्रकृति का दोष लगता है

दादाश्री हम गुरु रहने दो ऐसा कहते हैं

गुरु तो चाहिए ही सब जगह

व्यावहारिक गुरु हों वे तो अपने हितेच्छु कहलाते हैं वे हमारा हित श्रेय देखते हैं

व्यवहार में कोई अड़चन आए तो उन्हें पूछने जाना पड़ता है

व्यवहारिक गुरु तो चाहिए ही हमें

उन्हें हमें हटाना नहीं है

ज्ञानीपुरुष तो मुक्ति का साधन बताते हैं व्यवहार में कहीं दख़ल नहीं करते

अर्थात् ज्ञानीपुरुष तो मोक्ष के लिए हैं

आपके गुरु का और उनका कुछ लेना देना नहीं है

पहलेवाले गुरु छोड़ नहीं देने हैं

गुरु तो रहने ही देने हैं

गुरु के बिना तो व्यवहार किस तरह चलाओगे

ज्ञानीपुरुष के पास निश्चय जानने को मिलता है यदि जानना हो तो

व्यवहारिक गुरु संसार में मदद करते हैं संसार में हमें जो समझ चाहिए वैसी सारी आगे के लिए हेल्प करते हैं कोई परेशानी हो तो सलाह देते हैं अधर्म में से मुक्त करवाते हैं और धर्म दिखाते हैं

ज्ञानी तो धर्म और अधर्म दोनों छुड़वा देते हैं और मुक्ति की ओर ले जाते हैं

आपको समझ में आया न

वे व्यवहार के गुरु संसार में हमें सांसारिक धर्म सिखलाते हैं क्या अच्छा करें और कौन सा बुरा छोड़ दें वे सारी शुभाशुभ की बातें हमें समझाते हैं

संसार तो रहेगा ही इसलिए वे गुरु तो रहने देने हैं और हमें मोक्ष में जाना है तो उसके लिए ज्ञानीपुरुष अलग से चाहिए

ज्ञानीपुरुष वे भगवानपक्षी कहलाते हैं

प्रश्नकर्ता समझ में नहीं आया इसलिए पूछ लिया

दादाश्री ठीक है

पूछकर पक्का किया हो तो अच्छा

हर एक चीज़ पूछकर पक्की कर लो

यानी हम उनका तिरस्कार नहीं करें

जिन्हें गुरु बनाया हो उनका तिरस्कार करना भयंकर गुनाह कहलाता है

उनके पास से कुछ तो लिया था न हमने

कुछ तो हेल्प हुई होगी न

उन्होंने आपको एकाध सीढ़ी तो चढ़ाई होगी न

इसलिए आपको उनका उपकार मानना चाहिए

यानी अभी तक जो प्राप्त हुआ उसका उपकार तो है ही न

कुछ हमें लाभ दिया वह भूल नहीं सकते न

इसलिए गुरु को छोड़ नहीं देना होता उनके दर्शन करने चाहिए

उन्हें छोड़ दें तब तो उन्हें दु ख होगा

वह तो आपका गुनाह कहलाएगा

आपका उपकार मेरे ऊपर हो और मैं आपको छोड़ दूँ तो गुनाह कहलाएगा

इसलिए छोड़ते नहीं हमेशा उपकार रखना ही चाहिए

एक इतना भी उपकार किया हो और भूल जाए वह व्यक्ति खरा नहीं कहलाता

अर्थात् गुरु भले ही रहें

गुरु को रहने देना है

गुरु को हटाना नहीं है

कोई भी गुरु हों तो उन्हें हटाने नहीं जाना है

इस दुनिया में हटाने जैसा कुछ भी नहीं है

हटाने जाएँ तो आप जिनके आधार से चल रहे थे उनके आप विरोधी हो गए कहलाएँगे

कुछ विरोधी होने की ज़रूरत नहीं है

दादाश्री गुरु अर्थात् कभी भी पूरी ज़िन्दगीभर अपना मन उनके लिए बिगड़े नहीं ऐसे होने चाहिए

जब देखो तब मन में उल्लास ही रहा करे

वैसे गुरु यदि मिलें तो उनकी शरण में जाना

दादाश्री गुरुकृपा से तो बहुत मदद मिलती है

परंतु अपनी वैसी भावना वैसा प्रेम चाहिए

जिनके बिना हमें अच्छा नहीं लगे चैन नहीं पड़े वैसा भाव चाहिए

विरह लगना चाहिए

गुरु का ज्ञान जितना कच्चा होगा उतना समय उस शिष्य को अधिक लगेगा

एक्ज़ेक्ट ज्ञान तुरंत ही फल दे देता है और भले ही मुझे केवलज्ञान होते होते रुक गया है पर भेद ज्ञान तो मेरे पास आ गया है और वह तुरंत फल दे ऐसा है

दादाश्री वह तो हम संपूर्ण आज्ञा में रहे तो प्रसन्न होंगे

वे प्रसन्न हो जाएँ तो हमें पता चलेगा

रात दिन हमें प्रेम में ही रखेंगे

दादाश्री ऐसा है न प्रसन्न किसे कहते हैं कि कभी नाराज़ ही नहीं हों

शिष्य तो भूल करते ही रहेंगे लेकिन वे नाराज़ नहीं हों

दादाश्री उनकी आज्ञा पालने से

उनकी आज्ञा यदि पालें न तो उन्हें गुरुदक्षिणा पहुँच जाती है

ये हम पाँच आज्ञा देते हैं वे पालीं तो हमारी दक्षिणा पहुँच गई

दादाश्री विद्यागुरु नि स्पृही हों तो उनकी सेवा करके शारीरिक सेवा और दूसरे काम करके चुकाई जा सकती है

दूसरे भी कई तरीक़े होते हैं

नि स्पृही की भी अन्य प्रकार से सेवा की जा सकती है

अंतर्यामी गुरु यदि खुद आपको मार्गदर्शन देते रहते हों तो फिर बाह्य गुरु की ज़रूरत नहीं है

प्रश्नकर्ता देहधारी गुरु हों तो पुरुषार्थ अधिक हो सकता है

दादाश्री हाँ वह तो प्रत्यक्ष गुरु हों तो पुरुषार्थ तुरंत होता है

अंतर्यामी तो आपको बहुत मार्गदर्शन देते हैं

वह बहुत ऊँचा कहलाता है

अंतर्यामी प्रकट होना बहुत मुश्किल वस्तु है

वह तो बाहर के जो गुरु हैं वे आपको अधिक हेल्प करेंगे

नहीं तो भीतर आपके आत्मा को गुरु बनाओ

उनका नाम शुद्धात्मा है

उनसे कहें हे शुद्धत्मा भगवान आप मुझे मार्गदर्शन दीजिए तो वे देंगे

दादाश्री गुरु की ज़रूरत नहीं है

यह साध्य होने के बाद गुरु कौन हैं फिर

साधक के गुरु होते हैं

ये मुझे साठ हज़ार लोग मिले हैं

उन्हें गुरु बनाने की ज़रूरत नहीं है

दादाश्री हाँ सत्संग की ज़रूरत है

फिर पाँच आज्ञा पालने की ज़रूरत है

दादाश्री मैं यहाँ पर होऊँतब लाभ उठाएँ

रोज़ नहीं आएँ और महीने में एक बार आए तो भी हर्ज नहीं है

दादाश्री ज़रूरत तो है ही न

लेकिन हो सके उतना करना चाहिए जितना हो सके उतना

तो आपको अधिक लाभ होगा

प्रश्नकर्ता आप परदेश जाओ तब यहाँ पर बिल्कुल खाली हो जाता है

यहाँ फिर कोई इकट्ठे ही नहीं होते

आपको स्पष्ट समझ में आया या नहीं

स्पष्ट रूप से समझ में आए तो हल आएगा

नहीं तो इसका हल किस तरह आएगा

जिस स्पष्टतापूर्वक मैं समझा हूँ और जिस स्पष्टता से मैं छूटा हूँ संपूर्ण छूट गया हूँ जो रास्ता मैंने अपनाया है वही रास्ता मैंने आपको दिखाया है

प्रश्नकर्ता अभी तक वैसा अवसर उपस्थित नहीं हुआ

दादाश्री या तो गुरु बनाना नहीं और बनाओ तो गुरु पागलपन करे तो भी उसमें आपकी दृष्टि नहीं बिगड़नी चाहिए

पसंद करके लिया और फिर क्या

वह वापिस क्या काँच हो जाएगा

वह तो हीरा ही है

इसलिए जिन्हें पूजते हैं उन्हें उखाड़ मत देना

नहीं तो फिर जिन्हें पूजा है चालीस वर्षों से पूजा है और इकतालीसवें वर्ष में हटा दें काट दें तो चालीस वर्षों का तो गया और ऊपर से दोष बँधे

आप जय जय करना मत और करो तो उसके बाद पूज्यता टूटनी नहीं चाहिए

वह नहीं टूटे वही इस जगत् का सार है

इतना ही समझना है

दादाश्री हाँ वह मिट्टी में मिल जाता है

बिगड़े उतना ही नहीं लेकिन विरोधी बन बैठता है

प्रश्नकर्ता उसकी तरफ का जो भाव था वह सारा खत्म हो गया

दादाश्री खत्म हो गया और ऊपर से विरोधी बन गया

दादाश्री जिसे उल्टा दिखता है न उसका दोष

उल्टा है ही नहीं कुछ इस जगत् में

बाक़ी जगत् तो देखने जानने जैसा ही है दूसरा क्या

उल्टा और सीधा आप किसे कहते हो

वह तो बुद्धि अंदर उसकाती है

दादाश्री फिर गुरु का जो उपकार है उसे मानना चाहिए

क्योंकि उन्होंने आपको इस बाउन्ड्री से बाहर निकाला वह उपकार भूलना नहीं

जिन गुरु ने इतना भला किया हो उनके गुण किस तरह से भूल सकते हैं

इसलिए उनके वहाँ जाना चाहिए

गुरु अवश्य बनाने चाहिए और एक गुरु बनाने के बाद उन गुरु के प्रति ज़रा सा भी भाव बिगाड़ना नहीं चाहिए

इतना सँभाल लेना चाहिए बस

प्रश्नकर्ता जिसे विचार आते हैं उसका

उस समय तो मैंने उन खोजा लोगों का देखा था कि सभी एक गुरु को मानते थे कहते थे समर्थ गुरु हैं हमारे

अमरीका में जाकर एक गुरु ने शादी की इसलिए उनके भक्त नालायक है नालायक है कहने लगे

सभी शिष्य विरोधी हो गए कि ऐसा गुनाह नहीं करना चाहिए

अरे तुम्हारे गुरु को नालायक कहते हो

आप नमस्कार किसे करते थे

तब मुझे कहता है ऐसे गुरु नालायक नहीं कहलाएँगे

मैंने कहा इन खोजा लोगों को पूछकर देखो

उनकी विशेषता यह लगी कि उनके भक्त सबसे उच्च लगे पूरी दुनिया में

उन्होंने फ़ॉरेन की लेडी के साथ शादी की तो भी उनके भक्त उत्सव मनाते हैं और हम यहाँ के कोई गुरु उनकी जाति में शादी कर लें तो भी मार मारकर फज़ीता कर देते हैं

खोजा लोग तो गुरु ने फ़ॉरेनवाली से शादी की तो भी उत्सव मनाते हैं

उनके शिष्य तो कहेंगे भाई उन्हें सभी अधिकार हैं ना नहीं कह सकते

हमें तो तुरंत उत्सव मनाना चाहिए

तो यहाँ उनके सभी फॉलोअर्स बहुत खुश हो गए

यहाँ तो जुलूस निकाला उन लोगों ने

गुरु करें वह नहीं करना है हमें तो गुरु कहे वह करना है

लोगों को

आपके गुरु ने यदि विवाह कर लिया हो अरे विवाह नहीं किया हो परंतु किसीको ज़रा सा छेड़ा भी हो तो वहाँ आप सब उसे मारते रहो

इन खोजा लोगों के गुरु ने तो विवाह किया एक यूरोपिनय लेडी से

उन सभी लोगों ने उत्सव मनाया कि अपने गुरु एक यूरोपियन लेडी से शादी कर रहे हैं

उसे शिष्य कहते हैं

गुरु की कमी नहीं निकालते

सबकी कमी निकालना परंतु गुरु की कमी नहीं निकालनी चाहिए वह तो बहुत बड़ा जोखिम है

नहीं तो गुरु बनाना ही नहीं

हम गारन्टी देते हैं कि किसी भी पागल को गुरु बना लो और यदि पूरी ज़िन्दगी उसे निभाओ तो मोक्ष तीन जन्मों में हो जाए ऐसा है

परंतु गुरु जीवित होने चाहिए

इसीलिए तो इन लोगों को यह नहीं पुसाया और मूर्ति रखी गई

इसलिए मेरा क्या कहना है कि खुद का डिसाइड किया हुआ ऐसे मत तोड़ दो

गुरु बनाने वह कोई जैसी तैसी बात नहीं है

नहीं तो गुरु बनाओ तो अच्छी तरह से जाँच पड़ताल करके बनाओ

प्रश्नकर्ता परंतु जब गुरु बनाते हैं न तब शिष्य में इतनी समझ नहीं होती

दादाश्री और यह समझदारी का बोरा

हुआ इसलिए अब गुरु को नठारा कहें

इसके बदले तो भीम था न उस भीम का तरीक़ा अपनाना

दूसरे चार भाईयों का तरीक़ा नहीं अपनाना है हमें

क्योंकि किसी गुरु के पास नमस्कार करना पड़े तो भीम को कँपकँपी छूटती थी अपमान जैसा लगता था

इसलिए भीम ने क्या सोचा

कि ये गुरु मुझे पुसाते नहीं

ये सारे मेरे भाई बैठते हैं उन्हें कुछ नहीं होता और मैं तो देखता हूँ और मेरा अहंकार उछलने लगता है

मुझे उल्टे विचार आते हैं

मुझे गुरु तो बनाने ही चाहिए

गुरु के बिना मेरी क्या दशा होगी

उसने रास्ता ढूँढ निकाला

यानी सुबह होती शाम होती कि भीम वहाँ पर बैठ जाते

तो ऐसे गुरु अच्छे कि कभी गुस्सा तो नहीं आता हमें झंझट तो नहीं है

गुस्सा आए तब घड़ा उखाड़ दें और उन मनुष्यों पर तो बैठी हुई श्रद्धा वह तो मार ही डालती है क्योंकि भीतर भगवान हैं

उस घड़े पर तो सिर्फ आरोपण ही है हमने भगवान का आरोपण किया है

दादाश्री लाभ होगा ही न लेकिन उसे

ऐसे सीधी तरह से नहीं किया परंतु उल्टी तरह से भी किया न

नेमीनाथ भगवान को नमस्कार किया न

तब वह तो ऐसा है न यहाँ इतने छोटे छोटे बच्चे होते हैं उनके माता पिता कहते हैं कि दादाजी को जय जय कर

परंतु बच्चा जय जय नहीं करता

फिर जब बहुत कहें न तो अंत में ऐसे पीछे रहकर घूमकर जय जय करता है

वह क्या सूचित करता है

अहंकार है वह सब

उसी तरह भीम को भी अहंकार था इसलिए इस तरह घड़ा रखकर भी किया

फिर भी लाभ तो ज़रूर हुआ उसे

हाँ परंतु सचमुच ऐसा चला था

उस समय नेमीनाथ भगवान जीवित थे

दादाश्री हाँ वे प्रत्यक्ष थे

प्रश्नकर्ता इसलिए कुल मिलाकर तो उन्हीं की भजना की

दादाश्री ऐसा है न इस दुनिया में जो आँखों से दिखता है वह सारा ही जड़ है एक भी चेतन नहीं दिखता है

दादाश्री घड़ा जवाब नहीं देगा

परंतु गुरु बनाकर आप यदि गुरु को भटका देनेवाले हों बाद में आप बिगाड़नेवाले हों तो गुरु मत बनाना और आप हमेशा सीधे रहनेवाले हो तो गुरु बनाना

मैं तो सच्ची सलाह देता हूँ

फिर जैसे करना हो वैसे करना

बीच रास्ते में काट डालो तो बहुत जोखिमदारी है

गुरु का बीच रास्ते में घात करना इसके बदले तो आत्मघात करना अच्छा है

दादाश्री इससे अच्छा तो स्थापन करना ही मत

लोटा रखना अच्छा वह किसी दिन उखाड़ना तो नहीं पड़ेगा

लोटे का झंझट ही नहीं न

यह लोटा कुछ इतना सारा काम नहीं करता परंतु हेल्प बहुत करता है

दादाश्री दिखता है परंतु स्थापना की इसलिए अब उल्टा नहीं होगा

स्थापना की इसलिए बुद्धि से कह दो कि यहाँ पर तेरा राज नहीं रहेगा मेरा राज है यह

यहाँ तेरी और मेरी दोनों की स्पर्धा है अब

मैं हूँ और तू है

एक बार स्थापन कर के फिर उखाड़ना वह तो भयंकर गुनाह है

उसके दोष लगे हैं इन हिन्दुस्तान के लोगों को

उन्हें गुरु की स्थापना ही करनी नहीं आती

आज स्थापन तो कल उखाड़ देते हैं

परंतु ऐसा नहीं चलेगा

गुरु जो कुछ भी करते हों उसमें तू किसलिए माथा पच्ची करता है स्थापना करने के बाद

एक बार दिल में ठंडक हुई इसलिए मुझे हर्ज नहीं है ऐसा कहकर आपने गुरु बनाए

तो अब गुरु में कमियाँ निकालते हो

कमी निकालनेवाले कभी भी मोक्ष में नहीं गए परंतु नर्क में गए हैं

इसलिए हमने क्या कहा

कि तेरी आँखों में समाएँ वैसे हों उन्हें गुरु बनाना

फिर गुरु एक दिन तुझ पर चिढ़ गए तो वह मत देखना अब

पहले जो आँखों में समाए थे जैसे देखे थे वही के वही नज़र आने चाहिए

हमने पसंद किए थे न

ये लड़कियाँ पति को पसंद करें उस घड़ी जो रूप देखा हो वह फिर चेचक निकले फिर भी वह उसे पहले दिनवाले रूप में ही याद रखती है फिर

क्या करे फिर

तभी दिन बीतेंगे

नहीं तो दिन नहीं बीतेंगे

इस तरह जिसे स्वच्छंद निकाल देना हो उसे गुरु को इसी तरह देखना चाहिए

गुरु की भूल नहीं देखनी चाहिए

गुरु बनाए मतलब बनाए फिर एक भी दोष नहीं दिखे उस प्रकार से रहना

नहीं तो हम दूसरी जगह पर जा सकते हैं

यानी गुरु अपनी आँखों में समाएँ वैसे ढूँढकर और फिर उनके दोष नहीं निकालने चाहिए

परंतु लोग समझते नहीं हैं और गुरु बना बैठते हैं

दादाश्री अपनी श्रद्धा फलेगी लेकिन गुरु पर अभाव नहीं आए तब हमारी श्रद्धा फलेगी

गुरु शायद कभी उल्टा सीधा करें तो भी अभाव नहीं रहे तो अपनी श्रद्धा फलेगी

ऐसा है इस जगत् में श्रद्धा आती है और उड़ जाती है

एक सिर्फ ज्ञानीपुरुष ही ऐसे हैं कि जो श्रद्धा की ही मूर्ति हैं सभी को श्रद्धा आ जाती है

उन्हें देखते ही बात करते ही श्रद्धा आ जाती है

ज्ञानीपुरुष श्रद्धा की मूर्ति कहलाते हैं

वे तो कल्याण कर देते हैं

नहीं तो फिर भी आपकी श्रद्धा ही फल देती है

दादाश्री परंतु श्रद्धा उपजे वैसा स्थान चाहिए न

तब तक तो श्रद्धा हितकारी जगह पर या अहितकारी जगह पर बैठती है वह देख लो

हमें हितकारी पर श्रद्धा बैठती हो दृढ़ होती हो तो हर्ज नहीं है

बाक़ी अहितकारी पर श्रद्धा नहीं बैठनी चाहिए

दादाश्री नहीं श्रद्धा रखनी पड़े वैसा नहीं है श्रद्धा आनी चाहिए

श्रद्धा रखनी पड़े वह गुनाह है

श्रद्धा हमें आनी चाहिए

दादाश्री परन्तु ऐसा है न रखी हुई श्रद्धा नहीं चलेगी

श्रद्धा हममें आनी चाहिए

दादाश्री तब मैं श्रद्धा रखने को मना करता हूँ

श्रद्धा रखना ही मत मुझ पर बिल्कुल भी

श्रद्धा किसी भी जगह पर नहीं रखनी है

श्रद्धा तो सिर्फ बस में बैठते समय रखना गाड़ी में बैठते समय रखना

परंतु इन मनुष्यों पर अधिक श्रद्धा मत रखना

श्रद्धा तो हमें आनी चाहिए

प्रश्नकर्ता आनी चाहिए

दादाश्री हाँ आनी चाहिए

कुछ बोलिए आप ऐसा मैंने कहा

तब वे कहने लगे ऐसा तो होता होगा

श्रद्धा रखनी पड़ेगी

ये सभी लोग श्रद्धा रखते हैं न

मैंने कहा मुझे ऐसा रास नहीं आएगा

ऐसे ही थूक लगाकर चिपकाई हुई श्रद्धा कितने दिन रहेगी

उसके लिए तो गोंद चाहिए एकदम से चिपक जाएगी

ताकि फिर से उखड़े ही नहीं ना

कागज़ फट जाए परंतु वह नहीं उखड़े

ऐसा जो कहे कि आपका गौंद कम है

तो हमें कहना चाहिए कि नहीं गोंद आपको लगाना है टिकट मेरी है

यह तो आप गोंद चुपड़ते नहीं हैं और मैं एन्वेलप लिफ़ाफा पर टिकट लगाता हूँ न तो स्टेम्प मुहर लगाने से पहले तो टिकट नीचे गिर जाती है और फिर वहाँ जुर्माना भरना पड़ता है

आप टिकट के पीछे कुछ लगाओ

गोंद खत्म हो गया हो तो लेई लगाओ तो चिपकेगी

यानी श्रद्धा तो वह कि चिपकाने से चिपक जाए वापिस उखड़े ही नहीं

ऊपर मुहर मारे तो मुहर थक जाए लेकिन टिकट नहीं उखड़े

दादाश्री गुरु के चारित्र के आधार पर आती है

चारित्रबल होता है

जहाँ वाणी वर्तन और विनय मनोहर हों वहाँ श्रद्धा बैठानी ही नहीं होती श्रद्धा बैठ ही जानी चाहिए

मैं तो लोगों से कहता हूँ न यहाँ श्रद्धा रखना ही मत तो भी श्रद्धा हो ही जाती है

दूसरी जगहों पर रखी हुई श्रद्धा ऐसे करें न तो उखड़ जाती है तुरंत

इसलिए जहाँ वाणी वर्तन और विनय मनोहर हों मन का हरण हो वैसे हों तब सच्ची श्रद्धा बैठती है

दादाश्री वह बोले न तो तुरंत हमें श्रद्धा आ जाती है कि ओहोहो ये कैसी बातें करते हैं

उनके बोल पर श्रद्धा बैठ जाती है न तब तो काम ही निकल गया

फिर एक बार श्रद्धा बैठे और एक बार नहीं बैठे वैसा नहीं चलेगा

हम जब भी जाएँ तब वे बोलें तो हमें श्रद्धा आ जाए

उनकी वाणी ऐसी फस्र्ट क्लास होती है

भले ही साँवले हों और चेचक के दाग़ हों लेकिन वाणी फस्र्ट क्लास बोलते हों तो हम समझ जाएँगे कि यहाँ श्रद्धा बैठेगी

दादाश्री प्रभावशाली ऐसे होते हैं कि देखते ही दिल को ठंडक हो जाए

यानी देहकर्मी होने चाहिए

हम कहें कि भले बोलो मत परंतु ऐसा लावण्य दिखाओ कि मुझे श्रद्धा आ जाए

परंतु यह तो लावण्य भी नहीं दिखता

फिर श्रद्धा कहाँ से आए

इसलिए यदि आप वैसे देहकर्मी हैं तो मैं आपके प्रति आकर्षित हो जाऊँगा

मुझे उल्लास ही नहीं आता न आप पर

यदि आपका मुँह सुंदर होता तो भी शायद उल्लास आता

परंतु चेहरे भी सुंदर नहीं हैं शब्द भी सुंदर नहीं हैं

यानी न तो प्रभावशाली हैं न ही बोलना आता है

ऐसा नहीं चलेगा यहाँ पर तो या फिर ज्ञान सुंदर हो तो भी श्रद्धा आए

मेरा तो ज्ञान सुंदर है इसलिए श्रद्धा बैठती ही है

छुटकारा ही नहीं

बाहर तो शब्द सुंदर हों तो भी चलेगा

अब बोलना नहीं आता हो तो भी जब हम वहाँ पर बैठें तब भीतर दिमाग़ में ठंडक हो जाए तो समझना कि यहाँ पर श्रद्धा रखने जैसी है

जब जाएँ तब वहाँ जाएँ तब अकुलाहट बेचैनी में से ठंडक हो जाए तब समझना कि यहाँ श्रद्धा रखने जैसी है

वातावरण शुद्ध हो तब समझ जाना कि ये शुद्ध मनुष्य हैं तो वहाँ श्रद्धा आएगी

एक सेठ ने कहा मुझे तो बापजी पर बहुत श्रद्धा है

मैंने कहा आपको किसलिए श्रद्धा है

आइए सेठ आइए सेठ कहकर सबकी उपस्थिति में बुलाते हैं न इसलिए आपको श्रद्धा बैठ ही जाएगी न

जो खोजी व्यक्ति हो वह ऐसी श्रद्धा बिठाएगा

मैं तो खोजी था

मैंने तो बापजी से कह दिया था कि ऐसा कुछ बोलिए कि मुझे श्रद्धा बैठ जाए

आप अच्छा अच्छा बोलते हैं कि आइए अंबालालभाई आप बड़े कॉन्ट्रैक्टर हैं ऐसे हैं वैसे हैं वह मुझे पसंद नहीं है

आप मीठा मीठा बोलकर श्रद्धा बैठाओ वह मीनिंगलेस बात है

मुझे गालियाँ देकर भी ऐसा कुछ बोलिए कि मुझे श्रद्धा बैठे

बाक़ी यह आओ पधारो ऐसा कहें तो लोगों को धीरे धीरे श्रद्धा बैठती है

इसलिए यहाँ अपने को अच्छा है ऐसा वे कहेंगे

मन में समझते हैं कि ये सेठ किसी दिन काम आएँगे

कोई चश्मे मँगवाने हों कुछ चाहिए होगा तो काम के हैं

अब वे सेठ वैसे तो कालाबाज़ार करते होंगे वे बापजी जानते हैं

परंतु वे मन में समझते हैं कि हमें क्या

कालाबाज़ार करे तो वह भुगतेगा

परंतु हम चश्मे मँगवाएँ न

और सेठ क्या समझते हैं कि कोई हर्ज नहीं

देखो न बापजी मान देते हैं न अभी तक

हम कुछ बिगड़ नहीं गए हैं

वह बिगड़ गया कब मानता है

कि बापजी कहेंगे एय आप ऐसे धंधे करते हों तो यहाँ मत आना

तब ऐसा मन में होता है कि व्यवसाय बदलना पड़ेगा

क्योंकि बापजी आने नहीं देते

आइए आइए कहकर बैठाई हुई श्रद्धा टिकती होगी

ऐसी श्रद्धा कितने दिन रहेगी

छह बारह महीनों तक रहेगी और फिर उतर जाएगी

और मैं ऐसा नहीं कहता कि मुझ पर आप श्रद्धा रखो

क्योंकि मैं श्रद्धा रखवानेवाला मनुष्य ही नहीं हूँ

ये पचास हज़ार लोग आते होंगे तो हमारी बात के लिए श्रद्धा रखने को मना करते हैं

सभी को कह देते हैं कि हमारा एक अक्षर भी मत मानना

हम पर श्रद्धा रखना ही नहीं

आपका आत्मा कबूल करे तो ही हमारी बात को स्वीकार करना

नहीं तो हमें स्वीकार करवाना है वैसा कुछ नहीं है

प्रश्नकर्ता हाँ

प्रश्नकर्ता अधिकतर तो वैसे ही हैं

दादाश्री वह आड़ाई निकालनी है

कोई जान बूझकर मतभेद डाले तो मैं उसे मुँह पर कहूँ कि आपका आत्मा कबूल करता है लेकिन आप आड़ा बोलते हैं यह

ऐसा मैं कहूँ तब फिर वह समझ जाता है और कबूल करता है कि खुद आड़ा बोल रहा है

क्योंकि आड़ा बोले बगैर रहता नहीं न

किसलिए आड़ा बोलता है

माल भरा हुआ है उसने आड़ाई करने का माल भरा हुआ है

इसलिए जिसका पुण्य आड़ा हो उसे श्रद्धा नहीं बैठती

वर्ना ज्ञानीपुरुष तो श्रद्धा की मूर्ति कहलाते हैं

ज्ञानीपुरुष ऐसे होते हैं कि उस मूर्ति को देखते ही श्रद्धा बैठ जाती है

श्रद्धा बैठ ही जाती है वैसी मूर्ति

श्रद्धेय कहलाते हैं पूरे जगत् के लिए पूरे वल्र्ड के लिए

यह काल ऐसा विचित्र है कि श्रद्धा की मूर्ति नहीं मिलती

सभी मूर्तियाँ मिलती हैं परंतु श्रद्धा की मूर्ति निरंतर श्रद्धा बैठे वैसी मूर्ति नहीं मिलती

कभी ही जगत् में श्रद्धा की मूर्ति का जन्म होता है

श्रद्धा की मूर्ति अर्थात् देखते ही श्रद्धा आ जाए

फिर कुछ पूछना नहीं पड़ता ऐसे ही श्रद्धा आ जाती है

उसे शास्त्रकारों ने श्रद्धा की मूर्ति कहा है

किसी समय ही ऐसे अवतार अवतरित होते हैं तब कल्याण हो जाता हैं

यह हमारा अवतार ही ऐसा है कि हम पर उसे श्रद्धा बैठ ही जाती है

श्रद्धा की प्रतिमा बनना चाहिए

नालायक मनुष्य भी एक बार चेहरा देखे कि तुरंत श्रद्धा आ जाए

उस घड़ी उसके भाव उसकी परिणति पलट जाए

देखते ही पलट जाए

वैसी प्रतिमा श्रद्धा की प्रतिमा कभी कभार ही जन्म लेती है

तीर्थंकर साहब थे वैसे

इसलिए कैसा हो जाना चाहिए

श्रद्धा की प्रतिमा हो जाना चाहिए

परंतु श्रद्धा नहीं आए उसका कारण क्या होगा

खुद ही

ये तो कहेगा लोग श्रद्धा ही नहीं रखते तो क्या करूँ

अब जिन गुरु में बरकत नहीं हो वे लोग ऐसा कहते रहते हैं कि मुझ पर श्रद्धा रखो

अरे लोगों को तुझ पर श्रद्धा ही नहीं आती उसका क्या

तू वैसा बन जा श्रद्धा की प्रतिमा कि लोगों को देखते ही तुझ पर श्रद्धा बैठे

दादाश्री इसलिए यह श्रद्धा बैठनी वह कोई ऐसी वैसी बात नहीं है

रंजन के लिए ही ये सब उपदेश होते हैं

क्योंकि सच्चे उपदेश नहीं हैं यह

यह तो खुद का मनोरंजन हैं सारे

प्रश्नकर्ता हाँ सिर्फ उपदेश रंजन होते हैं और इसीलिए ही तो वैराग का रंग लगता नहीं है

दादाश्री इसमें सुननेवाले की क्या भूल है बेचारे की

उपदेशक की भूल है

सुननेवाले तो हैं ही ऐसे

वे तो साफ साफ ही कहते हैं न कि साहब हमें तो कुछ आता नहीं इसलिए तो आपके पास आए हैं

लेकिन यह तो उपदेशकों ने रास्ता ढूँढ निकाला है खुद का बचाव ढूँढ लिया है कि आप ऐसे नहीं करते आप ऐसे

ऐसा नहीं कहना चाहिए

वह आपके पास हेल्प के लिए आए और आप ऐसा करते हैं

यह तो उपदेशकों की भूल है

यह स्कूल के जैसी बात नहीं है

स्कूल की बात अलग है

स्कूल में जैसे बच्चे कुछ नहीं करते वह अलग है और यह अलग है

ये तो आत्महित के लिए आए हैं जिसमें दूसरी किसी तरह की बूरी दानत नहीं है

संसार हित के लिए नहीं आए हैं

इसलिए इन उपदेशकों को ही सबकुछ करना चाहिए

प्रश्नकर्ता खुद को अनुभव से ज्ञान प्राप्त हो और दूसरा उपदेश दे और ज्ञान प्राप्त हो वे दोनों ज़रा समझाइए

दादाश्री उपदेश का तो हम लोग शास्त्र में पढ़ते हैं न उपदेश उसके जैसा है

परंतु उपदेशकों में यदि कभी कोई पुरुष वचनबलवाला हो कि जिसका शब्द अपने अंदर घर कर जाए और वह निकले नहीं बारह बारह महीनों तक तो उस उपदेश की बात ही कुछ और है

वर्ना यह जिनका उपदेश एक कान में से घुसे और दूसरे कान में से निकल जाए वैसे उपदेश की कोई वेल्यु नहीं है

वह और पुस्तक दोनों एक से हैं

जिसका उपदेश और जिसके वाक्य जिसके शब्द भीतर महीनों तक गूंजते रहें उस उपदेश की खास ज़रूरत है

वह अध्यात्म विटामिनवाला उपदेश कहलाता है

वह शायद ही कभी हो सकता है

परंतु वे खुद चरित्रबलवाले होने चाहिए व्यवहार चारित्रवाले

शीलवान होने चाहिए जिनके कषाय मंद हो चुके होने चाहिए

यह तो वीतराग मार्ग कहलाता है

बहुत ही जोखिमदारीवाला मार्ग है

एक शब्द भी बोलना बहुत जोखिमवाली वस्तु है

उपदेशकों को तो बहुत जोखिमदारी है अभी

परंतु लोग समझते नहीं हैं जानते नहीं हैं इसलिए ये उपदेश देते हैं

अब आप उपदेशक हो या नहीं वह आप अपने आपको टटोलकर देखो

क्योंकि उपदेशक आर्तध्यान रौद्रध्यान से मुक्त होना चाहिए

शुक्लध्यान नहीं हुआ हो तो भी हर्ज नहीं

क्योंकि धर्मध्यान की विशेषता बरतती है

परंतु आर्तध्यान और रौद्रध्यान दोनों हुआ करते हों तो जोखिमदारी खुद की है न

भगवान ने कहा है कि यदि क्रोध मान माया लोभ की पूँजी आपके पास सिलक जमापूँजी में हो तब तक किसीको उपदेश मत देना

इसलिए मुझे कहना पड़ा कि यह जो व्याख्यान देते हो परंतु आपको सिर्फ स्वाध्याय करने का अधिकार है

उपदेश देने का अधिकार नहीं है

फिर भी यदि उपदेश दोगे तो यह उपदेश कषाय सहित होने के कारण नर्क में जाओगे

सुननेवाला नर्क में नहीं जाएगा

मुझे ज्ञानी होकर कठोर शब्द बोलने पड़े हैं

उसके पीछे कितनी करुणा होगी

ज्ञानी को कठोर होने की क्या ज़रूरत है

जिन्हें अहर्निश परमानंद अहर्निश मोक्ष बरतता हो उसे कठोर होने की ज़रूरत क्या होगी

परंतु ज्ञानी होकर ऐसा कठोर बोलना पड़ता है कि सावधान रहना स्वाध्याय करना

लोगों से ऐसा कह सकते हैं कि मैं स्वाध्याय कर रहा हूँ आप सुनो

परंतु कषाय सहित उपदेश नहीं देने चाहिए

प्रश्नकर्ता हाँ हाँ

यह तो गुरु कहेंगे मॉरल और सिन्सियर बन

बी मॉरल और बी सिन्सियर

अरे तू मॉरल बनकर आ न

तू मॉरल हो जा न तब तुझे मुझसे नहीं कहना पड़ेगा

मॉरल होकर मुझे कह तो मैं मॉरल हो जाऊँगा

तुझे देखते ही मॉरल हो जाऊँगा

जैसा देखें वैसा हम हो ही जाएँगे

परंतु वह खुद ही हुआ नहीं है न

मुझमें वीतरागता हो वह आप देखो और एक बार देख लें तो फिर होगा

क्योंकि मैं आपको करके दिखाता हूँ इसलिए आपको एडजस्ट हो जाता है

यानी मैं प्योर होऊँगा तो ही लोग प्योर हो सकेंगे

इसलिए कम्पलीट प्योरिटी होनी चाहिए

गुरु ऐसे होने चाहिए कि जिन्हें किसी भी चीज़ की इच्छा नहीं हो

वे लक्ष्मी नहीं चाहते हों और विषय नहीं चाहते हों दोनों की ज़रूरत नहीं हो

फिर कहें कि मैं आपके पैर दबाऊँगा सिर दबाऊँगा

पैर दबाने में हर्ज नहीं है हमें

पैर दबाएँ सेवा करें

मोक्ष के मार्ग पर तो उनके गुरु आत्मज्ञानी होने चाहिए

वैसे आत्मज्ञानी गुरु हैं नहीं इसलिए पूरा केस बिगड़ गया है

इसलिए मैं तो किसीका सुनता ही नहीं था

क्योंकि उनमें कोई बरकत नहीं दिखती थी उनके चेहरे पर नूर नहीं दिखता था उनसे पाँच लोग सुधरे हों तो मुझे दिखाओ कि जिनमें क्रोध मान माया लोभ की कमज़ोरियाँ चली गई हों या मतभेद कम हुए हों

यह तो क्लेश जाता नहीं कमज़ोरियाँ जाती नहीं और कहते हैं कि मुझे गुरु मिल गए हैं

अपने घर का क्लेश जाए कलह जाए तब गुरु मिले कहा जाएगा

नहीं तो कहा ही कैसे जाए कि गुरु मिले हैं

यह तो अपना पक्ष मज़बूत कराते हैं कि हम इस पक्ष के हैं

उस तरह अपना पक्ष मज़बूत करता है और गाड़ी चलाता है

अहंकार इस ओर का था उसे उस ओर मोड़ता है

हमें छह ही महीने सच्चे गुरु मिले हों तो गुरु इतना तो सिखाएँगे ही कि जिससे घर में क्लेश चला जाए

सिर्फ घर में से ही नहीं मन में से भी क्लेश चला जाए

मन में क्लेशित भाव नहीं हों और यदि क्लेश होते हों तो उस गुरु को छोड़ दो

फिर दूसरे गुरु ढूँढ निकालना

बाक़ी चिंता उपाधि हों घर में मतभेद हों वे सारी उलझनें यदि नहीं गई हों तो वे गुरु किस काम के

उन गुरु से कहें कि अभी तक मुझे गुस्सा आता है घर में

मैं तो बेटे बेटी पर चिढ़ जाता हूँ वह बंद करवा दीजिए

नहीं तो फिर अगले साल केन्सल कर दूँगा

गुरु को ऐसा कहा जा सकता है या नहीं कहा जा सकता

आपको कैसा लगता है

नहीं तो ये तो गुरुओं को भी मिठाई मिलती रहती है आराम से किश्तें मिलती ही रहती हैं न

यानी यह सारा अंधेर चल रहा है हिन्दुस्तान में

अपने हिन्दुस्तान देश में ही नहीं परंतु सब ओर ऐसा ही हो गया है

दादाश्री पहले के जमाने के एडवर्ड के रुपये और रानी छाप के रुपये आपने देखे हैं क्या

अब वह रुपया हो न तो भी ये लोग विश्वास नहीं रखते थे

अरे रुपये हैं व्यवहार में उसका चलन है न

परंतु नहीं तो भी उसे पत्थर या लोहे के ऊपर पटकते थे

अरे लक्ष्मी को मत पटक

परंतु फिर भी पटकते थे वे

क्यों पटकते होंगे

रुपया खनकाए तब कलदार है या खोटा वह पता चलेगा या नहीं चलेगा

ऐसे खनकाए कि खननन्

बोले तो हम उसे अलमारी में तिजोरी में रख देते हैं और यदि खोटा निकले तो काट देते हैं या फैंक देते हैं

अर्थात् ऐसा टेस्ट करके देखना रुपया खनकाकर देख लेना

उसी तरह गुरु को हमेशा टेस्ट करो

दादाश्री ऐसा है कि अविनय नहीं करें तो हम कब तक वहीं के वहीं बैठे रहें

हमें सिल्क रेशम चाहिए डबल घोड़े का सिल्क चाहिए तो हर एक दुकान में घूमते घूमते जाएँ तो कोई कहेगा भाई उसकी दुकान पर खादीभंडार में जाओ

अब वहाँ जाकर हम बैठे रहें लेकिन कुछ पूछें करें नहीं तो वहाँ कब तक बैठे रहें हम

इसके बदले तो पूछें कि भाई डबल घोड़े का सिल्क हो तो मैं बैठा रहूँ फिर छह घंटे बैठा रहूँगा लेकिन है क्या आपके पास

तब वह कहे ना नहीं है

तब हम उठकर दूसरी दुकान पर चले जाएँ

हम धोखा खाकर माल लाएँ वह किस काम का

माल लेने गएँ तो माल तो उसे देखना पड़ेगा न

ऐसे देखना नहीं पड़ेगा

ज़रा खींचकर देखना पड़ेगा न

फिर फटा हुआ निकले तब लोग कहेंगे आपने शाल देखकर क्यों नहीं ली थी

ऐसा कहते हैं या नहीं कहते

इसलिए श्रीमद् राजचंद्र कहते हैं न गुरु अच्छी तरह देखकर बनाना जाँच करके बनाना

नहीं तो भटका दोंगे

ऐसे ही चाहे जिसे चिपट पड़े वह काम में नहीं आएगा न

इसी तरह धोखा खाकर फिर क्या होगा

यानी सब ओर देखना पड़ेगा

इस कलियुग में अच्छे गुरु नहीं मिलेंगे और गुरु आपको पकाकर खा जाएँगे

दादाश्री कोई अच्छे गुरु हों तब वह डब्बा होगा

डब्बा मतलब समझता नहीं होगा कुछ भी

तो उस बिना समझ के गुरु का क्या करें फिर

समझ होती है तब दुरुपयोग करें वैसे होते हैं

इसलिए इसके बदले तो घर पर ये पुस्तकें हों वे पकड़कर उनका मनन करते रहना अच्छा

इसलिए जैसे अभी हैं वैसे गुरु नहीं चलेंगे

इसके बदले गुरु नहीं बनाना अच्छा है गुरु के बिना वैसे ही रहना अच्छा

प्रश्नकर्ता हमारी संस्कृति के अनुसार बिना गुरु का मनुष्य नगुणो निर्गुण गुणहीन कहलाता है

प्रश्नकर्ता संत पुरुषों के पास से सुना था

दादाश्री हाँ परंतु वे क्या कहते हैं

नगुणो नहीं परंतु नगुरो गुरु बिना का

या फिर नगुरो कहते हैं

नगुरो मतलब बिना गुरु का

गुरु नहीं हों उन्हें अपने लोग नगुरो कहते हैं

दादाश्री ऐसी कोई ज़रूरत नहीं है

दादाश्री यह तो ऐसा है इन गड़रियों ने यह बात फैलाई है

गड़रिया भेड़ों से यह बात कहता है कि नुगरा होकर मत घूमना

तब भेड़ें समझती हैं कि ओहोहो

मैं नुगरा नहीं हूँ

चलो कंठी बँधाओ

गुरु करो

तो ये गुरु किए

वे भेड़ें और ये गड़रिये

फिर भी यह शब्द हमें नहीं बोलने चाहिए

परंतु जहाँ ओपन समझना हो तब सिर्फ समझने के लिए कहते हैं

वह भी वीतरागता से कहते हैं

इसीलिए हम शब्द बोलते हैं फिर भी राग द्वेष नहीं होते

हम ज्ञानीपुरुष हुए हम जिम्मेदार कहलाते हैं

हमें किसी भी जगह पर थोड़ा भी राग द्वेष नहीं होता

प्रश्नकर्ता गुरु के पास से कंठी नहीं बँधवाई हो परंतु हमें किसी गुरु पर पूज्यभाव पैदा हुआ हो और उनका ज्ञान लें तो कंठी बँधवाए बिना गुरु शिष्य का संबंध स्थापित हुआ कहलाएगा या क्या

कितने ही शास्त्रों ने आचार्यों ने कहा है कि नुगरा हो तो उसका मुँह भी नहीं देखना चाहिए

दादाश्री ऐसा है कि बाड़े में घुसना हो तो कंठी बँधवाना और स्वतंत्र रहना हो तो कंठी नहीं बँधवाना

जहाँ पर ज्ञान देते हों उनकी कंठी बाँधना

बाड़ा मतलब क्या कहते हैं कि पहले तू इस स्टेन्डर्ड में तैयार हो जा

यह थर्ड स्टेन्डर्ड में तैयार हो जा तब तक और कहीं व्यर्थ प्रयत्न मत करना ऐसा कहना चाहते हैं

प्रश्नकर्ता उस कंठी की बात आई न इसलिए

प्रश्नकर्ता कंठी नहीं बाँधी हो तब तक वैसा उपदेश लें तो भी ज्ञान नहीं उतरेगा ऐसा वे कहते हैं

प्रश्नकर्ता लेकिन इसमें गुरु का पलड़ा अधिक वज़नदार बना दिया

दादाश्री वह परंपरा सच्ची थी

परंतु अभी तो परंपरा रही नहीं न

अब तो गद्दीपति बन बैठे हैं

गुरु का बेटा गुरु बन जाए वैसा कैसे माना जा सकता है

गद्दियों की स्थापना की वह दुरुपयोग किया

दादाश्री इसलिए कितने ही हमसे पूछते हैं कि यह आपने अक्रम क्यों निकाला

मैंने कहा यह मैंने नहीं निकाला है

मैं तो निमित्त बन गया हूँ

मैं किसलिए निकालूँ

मुझे क्या यहाँ पर गद्दियाँ स्थापित करनी है

हम क्या यहाँ गद्दियाँ स्थापित करने आए हैं

किसीका उत्थान करते हैं हमलोग

नहीं

यहाँ किसीका मंडन नहीं करते किसीका खंडन नहीं करते

यहाँ तो वैसा कुछ है ही नहीं

यहाँ गद्दी भी नहीं है न

गद्दीवाले को झंझट है सारी

जहाँ गद्दियाँ हैं वहाँ मोक्ष होता ही नहीं

दादाश्री वे सभी पोतापणां को मज़बूत करनेवाली चीज़ें हैं

पोतापणां को मज़बूत किया हो वह फिर कभी प्रकाश में आता है न किसीके साथ

तब लोग कहेंगे देखो असलियत सामने आई न

उसका पोतापणां बाहर आता है इसलिए उससे कभी भी अच्छा नहीं होता

यानी कि पूजे जाने की कामना छूटती नहीं है अनादि काल से यह भीख छूटी नहीं है

फिर नाम की भी भीख होती है इसलिए पुस्तकों में भी उनके नाम छपवाते हैं

इसके बदले तो शादी करनी थी न तो बच्चे नाम आगे बढ़ाते

यहाँ किसलिए नाम रखने हैं गुरु होने के बाद

पुस्तकों में भी नाम

मेरे दादा गुरु और मेरे बाप गुरु और फलाने गुरु

ऐसा ही सब छपवाते रहते हैं

इन मंदिरों में भी नाम डालने लगे हैं वापिस कि इन गुरु ने बनवाया

अरे नाम तो रहते होंगे कभी

संसारियों के नहीं रहते तो साधुओं के नाम तो रहते होंगे

नाम रखने की तो इच्छा ही नहीं होनी चाहिए

कोई भी इच्छा रखना भीख है

इसलिए भीख शब्द लिखता हूँ मैं

दूसरे लोग नहीं लिखते

तृष्णा लिखते हैं

अरे भीख लिख न

तो उसका भिखारीपन छूटे

तृष्णा का क्या अर्थ है

तृष्णा अर्थात् प्यास

अरे प्यास तो लगे या नहीं लगे उसमें क्या परेशानी है

अरे यह तो तेरी भीख है

जहाँ भीख हो वहाँ पर भगवान कैसे मिलेंगे

यह भीख शब्द ऐसा है कि बिना फाँसी के फाँसी लग जाए

संपूर्ण भीख जाने के बाद ही यह जगत् जैसा है वैसा दिखता है

जब तक मुझमें भीख होगी मुझे अन्य कोई भिखारी नहीं लगेंगे

परंतु खुद में से भीख गई तब सभी भिखारी ही लगेंगे

जिनकी सर्वस्व प्रकार की भीख मिटे उसे ज्ञानी का पद मिलता है

ज्ञानी का पद कब मिलता है

तमाम प्रकार की भीख खत्म हो जाए लक्ष्मी की भीख विषयों की भीख किसी भी प्रकार की भीख नहीं रहे तब यह पद प्राप्त होता है

भीख नहीं हो तो भगवान ही है ज्ञानी है जो कहो सो है

भीख के कारण ही यह ऐसा बन गया है

गिड़गिड़ाना इसीलिए पड़ता है न

भीख सिर्फ कहाँ पर रखनी है

ज्ञानीपुरुष के पास

ज्ञानीपुरुष के पास जाकर कहना कि बापजी प्रेम का प्रसाद दीजिए

वे तो देते ही रहते हैं परंतु हम माँगें तब विशेष मिलती है

जैसे छानी हुई चाय और बिना छानी हुई चाय में फर्क होता है न उतना फर्क पड़ जाता है

छानी हुई चाय में चाय की पत्तियाँ नहीं आतीं फिर

यानी कि यह तो भीख है इसलिए झंझट है

प्योरिटी नहीं रही

जहाँ तहाँ व्यापार हो गया है

जहाँ पैसे का लेन देन हुआ और जहाँ पर दूसरा कुछ घुसा वह सब व्यापार हो गया

उसमें सांसारिक लाभ उठाने की तैयारी होती है

भौतिक लाभ वे सब तो व्यापार कहलाते हैं

दूसरा कुछ नहीं लेता हो और मान की इच्छा हो तब भी वह लाभ कहलाता है

तब तक सभी व्यापार ही कहलाते हैं

हिन्दुस्तान ऐसा देश है कि सबका व्यापार चलता है

लेकिन व्यापार में जोखिमदारी है

हमें क्या कहना चाहिए कि आप यह ऐसा करते हो परंतु इसमें जोखिमदारी है

दादाश्री तब किस नाम पर पाखंड करने जाएँ

दूसरे नाम से पाखंड करने जाएँगे तो लोग मारेंगे

बापजी दस रुपये ले गए परंतु अब उन पर कोई आरोप लगाए और बापजी श्राप दे दें तो क्या होगा

इसलिए धर्म के नाम के अलावा दूसरा कोई रास्ता ही नहीं है और किसी जगह पर भाग छूटने की जगह नहीं है

उसमें ऐसा भी नहीं कह सकते कि सभी ऐसे ही हैं

इसमें पाँच दस प्रतिशत बहुत अच्छा माल है

परंतु वहाँ पर फिर कोई जाता ही नहीं है क्योंकि उनकी वाणी में वचनबल नहीं होता और इच्छावाले गुरु की वाणी तो प्रभावित कर दे वैसी होती है

इसलिए वहाँ पर सभी आते हैं

जब कि वहाँ उनकी भावना उल्टी होती है जैसे तैसे करके पैसे छीन लेना वैसा होता है

इन प्रपंची दुकानों में से क्या लेना है

ईमानदार दुकानें हों तब वहाँ माल नहीं होता तो वहाँ से क्या लेना है

सच्चे मनुष्य के पास दुकान में माल नहीं है

प्रपंची दुकानों में यों तौल में माल ज़्यादा देते हैं परंतु वह मिलावटवाला माल होता है

परंतु जहाँ किसी भी प्रकार की ज़रूरत नहीं हो पैसों की ज़रूरत नहीं हो खुद के आश्रम का विस्तार करने की या खुद का नाम कमाने की ज़रूरत नहीं हो वैसे मनुष्य हों तो बात अलग है

वैसे मनुष्य एक्सेप्टेड स्वीकार्य हैं

उस दुकान को यदि दुकान कहें तो भी वहाँ लोगों को लाभ होता है

फिर वहाँ पर ज्ञान नहीं हो तो भी उसमें हर्ज नहीं है परंतु लोग निर्मल होने चाहिए प्योर होने चाहिए

इम्प्योरिटी मलिनता से कभी कोई कुछ प्राप्त नहीं कर सकता

दादाश्री वह पद्धति सत्युग में ठीक थी यानी तीसरे और चौथे उन दो आरों में ठीक थी

पाँचवे आरे में आश्रम की पद्धति ठीक नहीं है

दादाश्री आश्रम पद्धति संप्रदाय खड़े करने का साधन ही हैं

संप्रदाय बनानेवाले सभी अहंकारी हैं ओवरवाईज़ नया खड़ा करते हैं तृतियम

मोक्ष में जाने की कोई भावना नहीं है

खुद की अक्लमंदी दिखानी है

वे नये नये भेद डालते रहते हैं और जब ज्ञानी प्रकट होते हैं तब सारे भेद बंद कर देते हैं कम कर देते हैं

लाख ज्ञानियों का एक ही अभिप्राय होता है और एक अज्ञानी के लाख अभिप्राय होते हैं

प्रश्नकर्ता कहलाता आश्रम है परंतु वहाँ परिश्रम होता है

किया है वह आपको बताऊँ

घर पर ऊब गया हो न तो वह पंद्रह दिन वहाँ पर आराम से खाता पीता और रहता है

वही सब धंधा किया है

इसलिए जिसे श्रम उतारना हो और खाना पीना और सोए रहना हो वह आश्रम रखे

पत्नी परेशान नहीं करती कोई परेशान नहीं करता है

घर पर पत्नी बच्चों के झगड़े होते हैं

वहाँ आश्रम में कोई झगड़नेवाला ही नहीं न कहनेवाला ही नहीं न

वहाँ तो एकांत मिलता है न इसलिए सचमुच के खर्राटे बुलवाते हैं

खटमल नहीं कुछ भी नहीं

ठंडी हवा संसार से जो थकान हुई हो वह वहाँ पर उतरते हैं

दादाश्री यहाँ पर आश्रम वाश्रम नहीं होता

यहाँ पर आश्रम तो होता होगा

मैं तो पहले से ही किसी भी आश्रम के विरुद्ध हूँ

मैं तो पहले से ही क्या कहता हूँ

मुझे तो भाई आश्रम की ज़रूरत नहीं है

लोग यहाँ पर आश्रम बनाने आए हैं न उन लोगों को मना कर दिया

मुझे आश्रम की ज़रूरत किसलिए है

आश्रम नहीं होता अपने यहाँ

इसलिए मैंने तो पहले से ही कहा है कि ज्ञानीपुरुष किसे कहते हैं कि जो आश्रम का श्रम नहीं करते

मैं तो पेड़ के नीचे बैठकर सत्संग करूँ ऐसा आदमी हूँ

यहाँ जगह की सहूलियत नहीं हो तो किसी पेड़ के नीचे बैठकर भी आराम से सत्संग करेंगे

हमें कोई हर्ज नहीं है

हम तो उदयाधीन हैं

महावीर भगवान भी पेड़ के नीचे बैठकर ही सत्संग करते थे वे कोई आश्रम नहीं ढूँढते थे

हमें कुटिया भी नहीं चाहिए और कुछ भी नहीं चाहिए

हमें कुछ भी ज़रूरत नहीं है न

किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है

ज्ञानी आश्रम का श्रम नहीं करते

प्रश्नकर्ता अप्रतिबद्ध विहारी शब्द उपयोग हुआ है उनके लिए

दादाश्री हाँ हम निरंतर अप्रतिबद्ध रूप से विचरते हैं द्रव्य क्षेत्र काल और भाव से निरंतर अप्रतिबद्ध रूप से विचरते हैं ऐसे ज्ञानीपुरुष

पूरा जगत् आश्रम बनाता है

मुक्ति पानी हो तो आश्रम का भार नहीं पुसाता

आश्रम के बजाय तो भीख माँगकर खाना अच्छा है

भीख माँगकर खाए उसके लिए भगवान ने छूट दी है

भगवान ने क्या कहा है कि भिक्षा माँगकर तू लोगों का कल्याण करना

तेरे पेट के लिए ही झंझट है न

आश्रम तो सत्युग में थे तब खुद मोक्ष के लिए ही प्रयत्न करते थे और इस कलियुग में तो श्रम उतारने का संग्रहस्थान है

अभी किसीको मोक्ष की कुछ नहीं पड़ी है

इसलिए इस काल में आश्रम बनाने जैसा नहीं है

प्रश्नकर्ता उन्हें रोकना चाहिए

दादाश्री नहीं नहीं रोक सकते

ऐसा तो दुनिया में इस तरह चलता ही रहेगा

दादाश्री परंतु ये रुपये ही ऐसे हैं न

रुपयों में बरकत नहीं है इसलिए

प्रश्नकर्ता लक्ष्मी आई इसलिए फिर उसके पीछे ध्यान देना पड़ता है व्यवस्था करनी पड़ती है

फिर फ़ीस रखते हैं सभी जैसे नाटक हो वैसे

नाटक में फ़ीस रखते हैं वैसे फ़ीस रखते हैं

उनमें पाँच प्रतिशत अच्छे भी होते हैं

बाक़ी तो सोने का भाव बढ़ गया वैसे इनके भी भाव बढ़ जाते हैं न

इसलिए मुझे पुस्तक में लिखना पड़ा कि जहाँ पैसों का लेन देन है वहाँ भगवान नहीं हैं और धर्म भी नहीं है

जहाँ पैसों का लेन देन नहीं है व्यापारी पहलू ही नहीं है वहाँ भगवान हैं

पैसा लेन देन वह व्यापारी पहलू कहलाता है

यह तो हमलोग किसीका नाम दें वह तो गलत कहलाएगा

यह तो आपको रूपरेखा दे रहा हूँ कि धर्म की क्या दशा हो गई है अभी

गुरु जो व्यापारी जैसे बन बैठे हैं वह सब गलत है

जहाँ प्रेक्टिशनर होते हैं फ़ीस रखते हैं कि आज आठ दस रुपये फ़ीस है कल बीस रुपये फ़ीस है तो वह सब बेकार है

जहाँ पैसों का व्यापार है वहाँ वे गुरु नहीं कहलाते

जहाँ टिकट है वह तो सब रामलीला कहलाता है

परंतु लोगों को अभी भान नहीं रहा इसलिए बेचारे टिकटवाले के वहीं पर जाते हैं

क्योंकि वहाँ पर झूठ है और यह खुद भी झूठा है इसलिए दोनों एडजस्ट हो जाते हैं

अर्थात् बिल्कुल झूठ और बिल्कुल घोटाला चल रहा है

ये तो फिर कहेंगे मैं निस्पृह हूँ मैं निस्पृह हूँ

अरे यह गाता क्यों रहता है

तू निस्पृही है तो तुझ पर कोई शंका रखनेवाला नहीं है और तू स्पृहावाला है तो तू चाहे जितना कहे फिर भी तुझ पर शंका किए बिना छोड़ेंगे नहीं

क्योंकि तेरी स्पृहा ही कह देगी तेरी दानत ही कह देगी

एक व्यक्ति मुझसे पूछता है कि उसमें दुकानदारों का दोष है या ग्राहकों का दोष

मैंने कहा ग्राहकों का दोष

दुकानदार तो चाहे कैसी भी दुकान लगाकर बैठें परंतु हम नहीं समझ जाएँ

इतना सा आटा काँटे में लगाकर मछुआरा तालाब में डालता है उसमें मछुआरे का दोष है या खानेवाले का दोष

जिसे यह लालच है उसका दोष है या मछुआरे का

जो पकड़ा जाए उसका दोष

ये अपने लोग फँसे हुए ही हैं न इन सब गुरुओं से

प्रश्नकर्ता अभी तो गुरु पैसों के पीछे ही पड़े होते हैं

यह तो कपड़े बदलकर लोगों को भरमाते हैं और लोग लालची हैं इसीलिए भ्रमित हो जाते हैं

लालची नहीं हो तो कोई भी भ्रमित न हो

जिसे किसी भी प्रकार का लालच नहीं है उसे भ्रमित होने की बारी नहीं आती

प्रश्नकर्ता परंतु आज तो गुरु के पास से भौतिक सुख माँगते हैं मुक्ति कोई नहीं माँगता है

दादाश्री सब ओर भौतिक की ही बातें हैं न

मुक्ति की बात ही नहीं है

यह तो मेरे बेटे के घर बेटा हो जाए या फिर मेरा व्यापार अच्छी तरह चले मेरे बेटे को नौकरी मिल जाए मुझे ऐसे आशीर्वाद दें मेरा कल्याण करें ऐसी अपार लालच हैं सभी

अरे धर्म के लिए मुक्ति के लिए आया है या यह सब चाहिए

अपने में कहावत है न गुरु लोभी शिष्य लालची दोनों खेलें दाँव

ऐसा नहीं होना चाहिए

शिष्य लालची है इसलिए गुरु उनसे कहेगा कि तुम्हारा यह हो जाएगा हमारी कृपा से ऐसा हो जाएगा यह हो जाएगा

वह लालच घुसा वहाँ बरकत नहीं आती

कलियुग के कारण गुरु में कोई सत्व नहीं होता है

क्योंकि वह आपसे अधिक स्वार्थी होते हैं

उसमें वे खुद का काम करवाने फिरते हैं आप अपना काम करवाने फिरते हो

ऐसा रास्ता गुरु शिष्य का नहीं होना चाहिए

प्रश्नकर्ता बुद्धिशाली लोग बहुत बार ऐसे गलत गुरु को वर्षों तक ऐसा ही मानते हैं कि ये ही सच्चे गुरु हैं

दादाश्री वे तो लालच होता है सारा

काफी कुछ लोग तो लालच से ही गुरु बनाते हैं

अभी के ये गुरु ये कलियुग के गुरु कहलाते हैं

किसी न किसी स्वार्थ में ही होते हैं कि किस काम में आएँगे

ऐसा पहले से ही सोचते हैं

अपने मिलने से पहले ही सोचते हैं कि ये क्या काम आएँगे

कभी ये डॉक्टर वहाँ पर जाए न और उसे देखें तब से विचार आते हैं कि किसी दिन काम आएँगे

इसलिए आइए आइए डॉक्टर कहेंगे

अरे तेरे किस काम के

कभी बीमार हो जाऊँ तब काम में आएँगे न

वे सभी ताकवाले कहलाते हैं

ताकवाले के पास हमारा काम कभी भी नहीं होगा

जो ताक में नहीं हैं जिन्हें कुछ चाहिए नहीं वहाँ जाना

ये ताक में रहनेवाले तो वे भी स्वार्थी और हम भी स्वार्थी

गुरु शिष्य में स्वार्थ हो तो वह गुरुपन भी नहीं है और वह शिष्यपन भी नहीं है

स्वार्थ नहीं होना चाहिए

प्रश्नकर्ता श्रद्धा है लोगों की इसलिए

यह तो मुझे भी लोग कहते हैं कि दादा ने ही यह सब दिया है

तब मैं कहता हूँ कि दादा तो कुछ देते होंगे

परंतु सब दादा के सिर पर आरोपित करते हैं

आपका पुण्य और मेरा यशनाम कर्म होता है इसलिए हाथ लगाऊँ और आपका काम हो जाता है

तब ये सब कहते हैं दादाजी आप ही करते हैं यह सब

मैं कहता हूँ कि नहीं मैं नहीं करता

आपका ही आपको मिला है

मैं किसलिए करूँ

मैं कहाँ यह झंझट मोल लूँ

मैं कहाँ इन झगड़ों में पडूँ

क्योंकि मुझे कुछ नहीं चाहिए

जिसे कुछ भी नहीं चाहिए जिसे कोई वांछना नहीं है किसी चीज़ के भिखारी नहीं हैं तो वहाँ आपका काम निकाल लो

मैं तो क्या कहता हूँ कि हमारे चरण रखवाओ पर लक्ष्मी की वांछनापूर्वक मत करो

ठीक है वैसा कोई निमित्त हो तो हमारे चरण रखवाओ

दादाश्री हाँ सबकुछ कर सकता है

सबकुछ ही हो सकता है

लेकिन लक्ष्मी की वांछना नहीं होनी चाहिए

यह दानत खोरी नहीं होनी चाहिए और यह आप मुझे फोर्स करके उठाकर ले जाओ उसका अर्थ पधरावनी किया कहलाएगा

पधरावनी मतलब तो मेरी राज़ीखुशी से होना चाहिए

फिर भले आप मुझे शब्दों से राज़ी करो या कपटजाल से राज़ी करो

लेकिन मैं कपटजाल से भी राज़ी हो जाऊँ वैसा नहीं हूँ

प्रश्नकर्ता आप ऐसा बोले दूसरा कोई ऐसा कहता भी नहीं

दादाश्री हाँ गुरु का चारित्र संपूर्ण शुद्ध होना चाहिए

शिष्य का चारित्र न भी हो लेकिन गुरु का चारित्र तो एक्ज़ेक्ट होना चाहिए

गुरु यदि बिना चारित्र के हैं तो वे गुरु ही नहीं उसका अर्थ ही नहीं

संपूर्ण चारित्र चाहिए

यह अगरबत्ती चारित्रवाली होती है इतने से कमरे में यदि पाँच दस अगरबत्तियाँ जलाई हों तो पूरा कमरा सुगंधीवाला हो जाता है

तब फिर गुरु तो बिना चारित्रवाले चलेंगे

गुरु तो सुगंधीवाले होने चाहिए

प्रश्नकर्ता एक भी नहीं

प्रश्नकर्ता लक्ष्मी और स्त्री वह सच्ची धार्मिकता के विरुद्ध है

परंतु स्त्रियाँ तो अधिक धार्मिक होती हैं ऐसा कहा जाता है

दादाश्री स्त्रियों में धार्मिकता होती है उसमें शंका नहीं है धर्म में स्त्रियाँ हों तो हर्ज नहीं है परंतु कुदृष्टि का हर्ज है कुविचार का हर्ज है

स्त्री को भोग का स्थान मानते हो उसमें हर्ज है वह आत्मा है वह भोग का स्थान नहीं है

बाक़ी जहाँ लक्ष्मी ली जाती है फ़ीस के रूप में लक्ष्मी ली जाती है टैक्स के रूप में लक्ष्मी ली जाती है भेंट के रूप में ली जाती है वहाँ धर्म नहीं होता

पैसे हों वहाँ धर्म नहीं होता और धर्म हो वहाँ पैसा नहीं होता

यानी कि समझ में आए वैसी बात है न

जहाँ विषय और पैसे हों वहाँ वह गुरु भी नहीं है

गुरु भी अब अच्छे तैयार होंगे

अब सब कुछ बदलेगा

अच्छा यानी शुद्ध

हाँ गुरु को पैसों की अड़चन हो तो हम पूछें कि आपको खुद के गुज़ारे के लिए क्या ज़रूरत है

बाक़ी दूसरा कुछ उन्हें नहीं होना चाहिए

या फिर बड़ा होना है फलाँ होना है ऐसा नहीं होना चाहिए

ये क्या सुखी लोग हैं

मूलत दु खी हैं लोग और उनके पास से रुपये लेते हो

दु ख निकालने के लिए वे गुरु के पास जाते हैं न

तब आप उसके पच्चीस रुपये लेकर उसका दु ख बढ़ा देते हो

एक पैसा भी नहीं लेना चाहिए किसीके पास से

एक रुपया भी नहीं लेना चाहिए

दूसरों के पास से कुछ भी लेना वह जुदाई कहलाती है

उसीका नाम संसार है

उसमें वही भटका हुआ है जो लेनेवाला मनुष्य है वह भटका हुआ कहलाता है

सामनेवाले को पराया समझता है इसलिए वह पैसे लेता है

इस दुनिया की कोई भी चीज़ एक रुपया भी यदि मैं खर्च करूँ तो मैं उतना दिवालिया हो जाऊँ

भक्तों का एक भी पैसा खर्च नहीं कर सकते

यह व्यापार जिसने शुरू किया है वह खुद दिवालिया की स्थिति में चला जाएगा यानी जो कुछ भी उन्हें सिद्धि प्राप्त है वह खोकर चले जाएँगे

जो थोड़ी बहुत सिद्धि प्राप्त हुई उसके आधार पर सब लोग उनके पास आते थे

परंतु फिर सिद्धि खत्म हो जाएगी

किसी भी सिद्धि का दुरुपयोग करो तो सिद्धि खत्म हो जाती है

कितने ही लोग यहाँ आकर पैसे रखते हैं

अरे यहाँ पैसे नहीं रखने होते यहाँ माँगना होता है

यहाँ तो रखने का होता होगा

जहाँ ब्रह्मांड का मालिक बैठा हुआ है वहाँ तो कुछ रखा जाता होगा

आपको तो सिर्फ माँगना होता है कि मुझे ऐसी अड़चन है वह निकाल दीजिए

वर्ना पैसे तो किसी गुरु के सामने रखना

उन्हें कुछ कपड़े चाहिए होंगे दूसरा कुछ चाहिए होगा

ज्ञानीपुरुष को तो कुछ भी नहीं चाहिए

आपको जो दु ख है तब हमें तो इस तरफ का फोन पकड़ा और इस तरफ देवी देवताओं को फोन किया

हमें बीच में कुछ भी नहीं है

मात्र एक्सचेन्ज करना है

नहीं तो हमें ज्ञानीपुरुष को यह सब होता ही नहीं न

ज्ञानीपुरुष इसमें कुछ हाथ नहीं डालते

लेकिन इन सबके दु ख सुनने पड़े हैं न

ये सारे दु ख मिटाने पड़े होंगे न

अड़चन हो तो रुपये माँगने आना

अब मैं तो रुपये देता नहीं मैं फोन कर दूँगा आगे

परंतु लोभ मत करना

तुझे परेशानी हो तभी आना

तेरी परेशानी दूर करने को सभी कर दूँगा

परंतु लोभ करने जाएगा उस घड़ी मैं बंद कर दूँगा

मैं इस दुनिया के दु ख लेने आया हूँ

आपके सुख आपके पास ही रहने दो

उसमें आपको हर्ज है क्या

आपके जैसे यहाँ पर पैसे दें तो मुझे पैसों का क्या करना है

मैं तो दु ख लेने आया हूँ

आपके पैसे आपके पास ही रहने दो वे आपके काम आएँगे और जहाँ ज्ञानी हों वहाँ पैसों का लेन देन नहीं होता

ज्ञानी तो बल्कि आपके सभी दु ख निकालने के लिए आए होते हैं दु ख खड़े करने के लिए नहीं आए होते हैं

यदि मैं लोगों से पैसे लूँ तो मुझे तो लोग चाहिए उतना पैसा देंगे

लेकिन मुझे पैसों का क्या करना है

क्योंकि वह सारी भीख जाने के बाद तो मुझे यह ज्ञानी का पद मिला है

मुझे अमरीका में गुरुपूर्णिमा के दिन सोने की चैन पहना जाते थे

दो दो तीन तीन तोले की

लेकिन मैं वापिस दे देता था सभीको

क्योंकि मुझे क्या करना है

तब एक बहन रोने लगी कि मेरी माला तो लेनी ही पड़ेगी

तब मैंने उसे कहा मैं तुझे एक माला पहनाऊँ तो तू पहनेंगी

तो उस बहन ने कहा मुझे कोई हर्ज नहीं

लेकिन आपका मुझसे नहीं लिया जा सकता

तब मैंने कहा मैं तुझे दूसरे के पास से पहनाऊँगा

एक मन सोने की माला बनवाएँ और फिर रात को पहनकर सो जाना पड़ेगा ऐसी शर्त रखें तो पहनकर सो जाओगी क्या

दूसरे दिन कहोगी लीजिए दादा यह आपका सोना

सोने में सुख होता तो सोना अधिक मिले तो आनंद हो

परंतु इसमें सुख है न वह मान्यता है तेरी रोंग बिलीफ़ है

इसमें सुख होता होगा

सुख तो जहाँ कोई भी चीज़ नहीं लेनी हो वहाँ सुख है

इस वल्र्ड में कोई चीज़ ग्रहण करनी बाकी न रहे वहाँ सुख है

प्रश्नकर्ता स्वच्छता का खुलासा कीजिए

इसलिए यहाँ पर अलग ही प्रकार का है यह दुकान नहीं है

फिर भी लोग तो इसे दुकान ही कहेंगे

क्योंकि और सभी ने दुकान खोली वैसी दुकान आपने भी किसलिए खोली

आपको क्या गर्ज़ है

मुझे भी वैसी गर्ज़ तो है न कि मैंने जो सुख पाया वह आप भी पाओ

क्योंकि लोग कैसे भट्ठी में भुन रहे हैं शक्करकंद भट्ठी में भुनें वैसे भुने जा रहे हैं लोग

या फिर मछलियाँ पानी से बाहर छटपटाएँ वैसे छटपटा रहे हैं

इसलिए हमें घूमना पड़ता है

बहुत लोगों ने शांति का मार्ग प्राप्त कर लिया है

मुझे आचार्य कब बनाएँगे

और आचार्य हो तो मुझे फलाँ कब बनाएँगे

वही भावना सबको होती है

जब कि इस ओर लोगों को कालाबाज़ार करने की भावना है

कलेक्टर हो तो मुझे कमिश्नर कब बनाएँगे

वही भावना होती है

जगत् कल्याण की तो किसीको पड़ी नहीं है

यानी कि रिलेटिव में जगत् गुरुता में जाता है

गुरुत्तम तो हो नहीं सकते

दादाश्री गुरुता अर्थात् बढऩा ही चाहते हैं ऊँचे चढऩा चाहते हैं

वे ऐसा समझते हैं कि गुरुत्तम हो जाऊँगा तो ऊपर उठ जाऊँगा उन्हें रिलेटिव में ही गुरुता चाहिए

उसका तो कब ठिकाना पड़ेगा

क्योंकि रिलेटिव विनाशी है

इसलिए गुरुता इकट्ठी की हुई होती है इसलिए वह बड़ा बनने को फिरता है परंतु कब नीचे गिर जाएगा वह कैसे कह सकते हैं

रिलेटिव में लघुता चाहिए

रिलेटिव में ये सभी गुरु बनने को फिरते हैं उससे कुछ दिन नहीं बदलते

बाक़ी जो लघुत्तम नहीं हुआ है वह गुरुत्तम होने के लिए पात्र नहीं है

जब कि आज एक भी गुरु ऐसे नहीं है कि जिन्होंने लघुत्तम बनने का प्रयत्न किया हो

सभी गुरुता की ओर गए हैं

किस तरह से मैं ऊँचे चढूँ

उसमें किसीका दोष नहीं है

यह काल बाधक है

बुद्धि टेढ़ी चलती है

इन सभी गुरुओं का काम क्या होता है

किस तरह बड़ा हो जाऊँ

गुरुपन बढ़ाना वह उनका व्यापार होता है

लघु की तरफ नहीं जाते

व्यवहार में गुरुता बढ़ती गई नाम हुआ कि भाई इनके एक सौ आठ शिष्य हैं

यानी निश्चय में उतना लघु हो गया

लघुत्तम होता जाता है

व्यवहार में गुरु होने लगे वह गिरने का संकेत है

दादाश्री हाँ उस तरह सभी मेरे गुरु

इसलिए मैंने तो पूरे जगत् के जीव मात्र को गुरु बनाया है

गुरु तो बनाने ही पड़ेंगे न

क्योंकि ज्ञान सभी लोगों के पास है

प्रभु कहीं खुद यहाँ पर नहीं आते

वे ऐसे फालतू नहीं है कि आपके लिए यहाँ पर चक्कर लगाएँ

दादाश्री मुझे किस तरह पता चले

वह तो आप जाँच करते हो तो आपको पता चलेगा

मैं जाँच करने नहीं गया

दादाश्री परंतु मैं जिस शिखर पर हूँ उससे बड़ा अगर कोई शिखर हो तो मुझे कैसे पता चले

शिखर पर गए हुए हर एक ने क्या कहा है कि मैं ही अंतिम शिखर पर हूँ

परंतु मैं ऐसा नहीं कहता

इस वल्र्ड में मुझसे कोई भी लघु नहीं है वैसा लघुत्तम पुरुष हूँ

यदि छोटा बन जाए तब तो वह बहुत बड़ा भगवान हो जाए

फिर भी भगवान होना मुझे बोझ जैसा लगता है बल्कि शर्म आती है

हमें वह पद नहीं चाहिए

किसलिए वह पद चाहिए

ऐसे काल में वह पद प्राप्त करना चाहिए

ऐसे काल में चाहे जैसा व्यक्ति भगवान पद लेकर बैठ गया है

इसलिए दुरुपयोग होता है बल्कि

हमें उस पद का क्या करना है

मैं ज्ञानी हूँ वह पद कम है

पूरे जगत् के शिष्य के रूप में ज्ञानी हूँ

लघुत्तम पुरुष हूँ

फिर इससे बड़ा पद कौन सा

लघुत्तम पद से कभी भी गिर नहीं सकते उतना बड़ा पद है

और जगत् का शिष्य बनेगा न वह गुरुत्तम बनेगा

रास्ता ही यह है हाँ

यह वाक्य दिशा बदलने को कहता है

आप जो गुरुतम अहंकार करते फिरते हो मतलब क्या कि मैं इस तरह आगे बढूँ और भविष्य में बड़ा कैसे बनूँ

वैसा जो आप प्रयत्न कर रहे हो वह गुरुत्तम अहंकार कहलाता है

उसके बदले मैं किस तरह छोटा बनूँ ऐसे लघुत्तम अहंकार में जाओगे तो जबरदस्त ज्ञान प्रकट होगा

गुरुत्तम अहंकार हमेशा ज्ञान पर आवरण लाता है और लघुत्तम अहंकार ज्ञान प्रकट करता है

इसलिए किसीने कहा कि साहब आप तो बहुत बड़े मनुष्य हैं

मैंने कहा भाई तू मुझे पहचानता नहीं मेरा बड़प्पन नहीं पहचानता

तू गाली देगा तब पता चलेगा कि मेरा बड़प्पन है या नहीं

गालियाँ दें तब पुलिसवाले का स्वभाव दिख जाता है या नहीं दिख जाता

वहाँ तू क्या समझता है

ऐसा कहे तो समझना कि आया पुलिसवाला

पुलिसवाले का स्वभाव मुझमें दिखे तो समझना कि मुझमें बड़प्पन है

पुलिसवाले का स्वभाव नहीं दिखे तो मैं लघुत्तम हूँ यह विश्वास हो गया न

इसलिए हमें कोई गाली दे तो हम कहते हैं कि भाई देख तेरी गाली है वह हमें स्पर्श नहीं करती उससे भी हम छोटे हैं

इसलिए तू ऐसा कुछ ढूँढ निकाल हमें स्पर्श करे वैसी गाली बोल

तू हमें गधा है कहेगा तो उससे तो बहुत छोटे हैं हम

तो तेरा मुँह दु ख जाएगा

हमें गाली छुए वैसा हमारा स्थान ढूँढ निकाल

हमारा स्थान लघुत्तम है

यानी ये तो कौन हैं

लघुत्तम पुरुष

लघुत्तम पुरुष के दर्शन कहाँ से मिलें

ऐसे दर्शन ही नहीं होते न

वल्र्ड में एक आदमी ढूँढ लाओ कि जो लघुत्तम हो और ये पचास हज़ार लोग होंगे परंतु इन सभी के शिष्य हैं हम

मैं खुद शिष्य बनाता ही नहीं हूँ

इन्हें मैंने शिष्य नहीं बनाया

दादाश्री कोई ज़रूरत नहीं है न

हमारा एक भी शिष्य नहीं है

लेकिन रोनेवाले बहुत हैं

कम से कम चालीस पचास हज़ार रोनेवाले लोग हैं

दादाश्री वह तो समय उस घड़ी बताएगा कि बाद में कौन है वह

मैं तो कुछ जानता नहीं हूँ और ऐसा सोचने के लिए फुरसत भी नहीं है

डॉ नीरूबहन अमीन